

# अंकुर



114-117वाँ संयुक्तांक  
अप्रैल 2019 से मार्च 2020



राजभाषा कार्यान्वयन समिति, कार्यालय महालेखाकार (लेखा व हकदारी)  
पंजाब एवं यू.टी. चण्डीगढ़ - 160017



**कुर्सियों पर बाएँ से :**

**श्रीमती सीमा गुप्ता; लेखा अधिकारी, श्रीमती अश्वती वी.एस.; प्रवर उपमहालेखाकार,  
श्री फ़ैसल इमाम; महालेखाकार, श्री विनय कुमार गर्ग; सहायक लेखा अधिकारी ।**



**खड़े हुए बाएँ से :**

**श्री यादव जगदीश चन्द्र मुनिराज; क.हि.अ., श्री फूल सिंह; क.हि.अ.,  
श्रीमती एकता; व.हि.अ., श्री महेन्द्र सिंह; क.हि.अ. ।**



लोकहितार्थं सत्यनिष्ठा  
Dedicated to Truth in Public Interest

# अंकुर

(114 वां से 117 वां संयुक्तांक, अप्रैल 2019 से मार्च 2020)



राजभाषा कार्यान्वयन समिति  
कार्यालय महालेखाकार (लेखा व हकदारी)  
पंजाब एवं यू.टी. चण्डीगढ़-160017

## प्रकाशन विवरण

|               |   |                                                                                                                                                                                           |
|---------------|---|-------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------|
| मुख्य संरक्षक | : | श्री फ़ैसल इमाम<br>महालेखाकार (लेखा व हकदारी)<br>पंजाब एवं यू.टी. चण्डीगढ़-160017                                                                                                         |
| संरक्षक       | : | श्रीमती अश्वती वी.एस.<br>वरिष्ठ उपमहालेखाकार (प्रशासन)                                                                                                                                    |
| मुख्य संपादक  | : | श्रीमती सीमा गुप्ता<br>वरिष्ठ लेखा अधिकारी                                                                                                                                                |
| संपादक        | : | श्रीमती संगीता सैनी<br>सहायक लेखा अधिकारी                                                                                                                                                 |
| संपादन सहयोग  | : | श्रीमती एकता<br>वरिष्ठ हिन्दी अनुवादक<br>श्री फूल सिंह<br>कनिष्ठ हिन्दी अनुवादक<br>श्री महेन्द्र सिंह<br>कनिष्ठ हिन्दी अनुवादक<br>श्री यादव जगदीश चन्द्र मुनिराज<br>कनिष्ठ हिन्दी अनुवादक |
| मुख पृष्ठ     | : | जैपनीज़ गार्डन, चण्डीगढ़                                                                                                                                                                  |
| अंक           | : | 114 से 117 वां संयुक्तांक                                                                                                                                                                 |
| प्रतियां      | : | तीन सौ प्रतियां                                                                                                                                                                           |
| प्रकाशक       | : | राजभाषा कार्यान्वयन समिति,<br>कार्यालय महालेखाकार (लेखा व हकदारी),<br>पंजाब एवं यू.टी. चण्डीगढ़- 160017                                                                                   |
| मूल्य         | : | राजभाषा के प्रति निष्ठा।                                                                                                                                                                  |
| मुद्रक        | : | आज़ाद ऑफ़सेट प्रिंटर्स प्रा. लि.<br>प्लॉट नं 144, प्रैस साईट, इंडस्ट्रीयल एरिया, फेस-1, चण्डीगढ़<br>फोन: 0172-2656144, 2657144 Email : aop144@gmail.com                                   |

# अनुक्रमणिका

|                        |     |
|------------------------|-----|
| प्रकाशक विवरण          | 2   |
| मुख्य संरक्षक का संदेश | 4   |
| संरक्षक का संदेश       | 5   |
| संपादकीय               | 6   |
| पाठकों के पत्र         | 7-8 |

## आलेख

|                                |                    |       |
|--------------------------------|--------------------|-------|
| अपने हाथ जगन्नाथ               | रंजु महाजन         | 10-11 |
| जल संरक्षण – समस्या एवं समाधान | जिज्ञान खान        | 12-13 |
| हाँ, हिंदी माँ, मेरी है        | दिनेश कुमार तिवारी | 14-17 |
| तनाव के कारण                   | सीता देवी          | 18    |
| वोटिंग                         | हरबंस कौर ओबराय    | 19    |

## कविता

|                   |                          |       |
|-------------------|--------------------------|-------|
| इंसान और इंसानियत | जिज्ञान खान              | 25    |
| शुरुआत नए कल की   | विनय कुमार गर्ग          | 26    |
| बेबसी             | सुनील कुमार गुप्ता       | 27    |
| तलाश              | बनवारी लाल मीणा 'मांदड़' | 28    |
| गज़ल              | रिंकू कश्यप              | 29    |
| चुटकुले           | सीमा गुप्ता              | 30-31 |

## कहानी

|          |               |       |
|----------|---------------|-------|
| अविभाजित | संतोष धीमान   | 33-38 |
| घुटन     | एकता          | 39    |
| बिजूका   | जसविंदर शर्मा | 40-42 |

## कार्यालयीन समाचार

|                                               |       |
|-----------------------------------------------|-------|
| खेल समाचार एवं अन्य गतिविधियाँ                | 43-47 |
| नियुक्तियाँ, पदोन्नतियाँ एवं सेवा निवृत्तियाँ | 48-52 |

## मुख्य संरक्षक का संदेश



मुझे यह जानकर अति प्रसन्नता हो रही है कि कार्यालय पत्रिका 'अंकुर' के 114-117 वें अंक का प्रकाशन होने जा रहा है। इस अवसर पर मैं पत्रिका परिवार से जुड़े सभी सदस्यों को हार्दिक बधाई देता हूँ।

विभागीय पत्रिका न केवल कार्यालय में हिंदी कार्यान्वयन को प्रतिबिंबित करती है, बल्कि उन प्रतिभाओं को भी अभिव्यक्ति का अवसर प्रदान करती है जो राजभाषा हिंदी के उद्देश्यों व लक्ष्यों की प्राप्ति के लिए प्रतिबद्ध है।

भविष्य में भी राजभाषा हिंदी के प्रचार-प्रसार के प्रति इसी प्रकार का उत्साह बनाए रखें, यही कामना है।

पुनः मैं अंकुर पत्रिका के सभी पाठकों, रचनाकारों एवं संपादक मंडल को हार्दिक शुभकामनाएं देता हूँ और पत्रिका के उज्ज्वल भविष्य के लिए कामना करता हूँ।

शुभकामनाओं सहित।

फैसल

फैसल इमाम

महालेखाकार (लेखा व हकदारी),  
पंजाब एवं यू.टी. चंडीगढ़-160017

## संरक्षक का संदेश



हमारी कार्यालयीन हिंदी गृह पत्रिका 'अंकुर' के प्रकाशन पर अतीव प्रसन्नता का अनुभव हो रहा है।

'अंकुर' पत्रिका राजभाषा हिंदी के प्रचार-प्रसार एवं प्रोत्साहन को समर्पित पत्रिका है। अपने इस दायित्व को निभाने के अलावा कार्यालय की गतिविधियां भी इसमें प्रतिबिंबित होती हैं। 'अंकुर' के प्रकाशन में उन सभी अधिकारियों व कर्मचारियों के योगदान को सराहने का इससे अच्छा मंच नहीं हो सकता था जिन्होंने शासकीय कार्य करते हुए भी अपने व्यस्ततम समय में से कुछ क्षण इस पत्रिका को भी प्रदान किये हैं।

पत्रिका के उज्ज्वल भविष्य की कामना करती हुई मैं, संपादक मंडल को हार्दिक शुभकामनाएं देती हूँ।

अश्वती वी.एस.

वरिष्ठ उप महालेखाकार (प्रशासन)



‘अंकुर’ पत्रिका का 114–117 वां अंक आपको सौंपते हुये मुझे अति हर्ष का अनुभव हो रहा है। किसी भी विभागीय पत्रिका के लिये उसकी सुदीर्घ परम्परा, गर्व तथा गौरव की बात होती है। इस बहुप्रशंसित तथा पुरस्कृत पत्रिका की सारी उपलब्धियों का श्रेय मैं इसके रचनाकारों तथा सहृदय पाठकों को देते हुये उनके प्रति कृतज्ञता ज्ञापित करती हूँ।

राजभाषा हिंदी के लिए कार्यालय में जो सकारात्मक वातावरण तैयार हुआ है, उस में ‘अंकुर’ पत्रिका के योगदान को नकारा नहीं जा सकता। आज समस्त राष्ट्र राजभाषा हिंदी के महत्व तथा लोकतंत्र की सफलता में उसकी उपादेयता को गम्भीरता से स्वीकार करने लगा है। इसलिये प्रत्येक सरकारी अधिकारी व कर्मचारी का यह नैतिक दायित्व है कि वह राजभाषा हिंदी में अपना अधिक से अधिक सरकारी कार्य करे ताकि राष्ट्रीय गौरव व उन्नति में हम भी अपना योगदान दे सकें।

अंत में, मैं ‘अंकुर’ परिवार से सम्बद्ध तमाम लेखकों, पाठकों तथा संपादक-सहयोगियों को हार्दिक शुभकामनाएं देते हुए उनके सक्रिय सहयोग का अनुरोध करती हूँ। आप सभी के विचारों तथा सम्मतियों की प्रतीक्षा में।

संगीता सैनी  
सहायक लेखा अधिकारी (हिन्दी)

# पाठकों के पत्र

[illegible][illegible][illegible][illegible]

**पाठकों के पत्र** 

[illegible][illegible][illegible][illegible]



आलेख

# अपने हाथ, जगन्नाथ

—रंजु महाजन



कराग्रे वसति लक्ष्मी, करमूले सरस्वती,  
कर मध्ये तू गोविन्दा, प्रभात कर दर्शनम्।

पुरुषार्थ और परमार्थ से मन अगर चाहे तो दुनिया को हिला सकता है। वह स्वयं भाग्य विधाता है। परमात्मा ने मानव को अनंत शक्तियों व असीम गुणों से सुशोभित किया है। वह अपने आत्मबल, आत्मज्ञान और आत्मनिर्भरता से सफलता की बुलन्दियों को छू सकता है।

मिट्टा दे अपनी हस्ती को, गर मर्तबा चाहिए  
कि दाना खाक में मिलकर, गुले गुलज़ार होता है।

जो व्यक्ति दूसरों पर आश्रित रहते हैं, आत्मविश्वास खो बैठते हैं, कदापि सफलता उनके कदम नहीं चूमती, जिन्दगी के हर मोड़ पर विफल रहते हैं। पुरुषार्थ, परमार्थ, साहस, उत्तेजना, उत्कण्ठा, जिज्ञासा जैसे अनमोल गुणों से वंचित होकर डिप्रेशन के शिकार हो जाते हैं। कुंठित मन, शक्तिहीन तन उसे बेजान बना देता है।

‘हिम्मत मर्दा, मददे खुदा’ पर विश्वास न करके वह परमात्मा की सुन्दर रचना का स्वयं तिरस्कार करता है और पंडितों और ज्योतिषियों के पास अपनी समस्याओं के निवारण हेतु असहाय होकर पहुंच जाता है। वह आत्मविश्वास, आत्मबल, आत्म निरीक्षण, सतत् परिश्रम, अथाह धैर्य, ईश्वर पर विश्वास रखकर और जोश व जुनून से कर्मठ होकर भौतिक, राजनैतिक, आर्थिक, सामाजिक व आध्यात्मिक उन्नति कर सकता है।

“देखो नहीं ये हाथ की रेखा, उल्टो मत पतरा—पोथी,  
मीन मेष कुछ कर न सकेंगे, यह बातें सारी थोथी।

धरे हाथ पर हाथ न बैठो, उठो बढ़ो कुछ काम करो  
स्वयं कुछ कर सकते हो तुम—मत ईश्वर को बदनाम करो।

एक लघु कथा कैसे हमारा पथ प्रदर्शित कर रही है। एक बार एक पकी हुई फसल के खेत में एक चिड़िया अपने नन्हे बच्चों के साथ एक वृक्ष पर रह रही थी। पकी फसल को काटने के लिए उसने अपने रिश्तेदारों को बुलाया व बेटे को इसके बारे में अवगत कराया। चिड़िया के बच्चों ने यह बात सुन ली और चिन्तित हो कर कहा—“मां हमें तो उड़ना भी नहीं आता हम कैसे जिएंगे?” मां चिड़िया ने कहा—बच्चों, ‘डरो मत जो दूसरों का सहारा लेता है उनका कोई काम नहीं होता। सारा दिन बाप—बेटा रिश्तेदारों का इन्तज़ार करते रहे, सांझ तक कोई नहीं आया। अगले दिन फिर बाप ने बेटे को कहा—बेटा,—आज मैंने अपने मित्रगण को फसल काटने के लिए निमंत्रित किया है। फिर वही सवाल चिड़िया के नन्हें—नन्हें बच्चों ने चिड़िया से किया, चिड़िया का फिर वही उत्तर—‘जो पराश्रित होते हैं, उनसे कुछ नहीं होता तुम



निश्चिन्त रहो। सांझ तक बाप बेटा मित्रगणों का इन्तजार करते-करते थक गए, निराश हो गए। अंततः अगले दिन बाप ने बेटे से कहा—बेटा चल, तू और मैं फसल काटने कल खेत में चलेंगे। यह सुन कर चिड़िया अपने बच्चों सहित किसी सुरक्षित स्थान पर प्रस्थान कर गई। वह निर्भीक होकर आत्मसंतुष्टि से आरक्षित हो गई। भाव यह है कि ज्वलंत समस्याओं के कारक भी हम हैं और निवारक भी हम हैं। स्वच्छता, बेरोजगारी, निरक्षरता, भुखमरी, बढ़ती जनसंख्या, मिलावट, प्रदूषण तथा अन्य समस्याओं के जनक भी हम ही हैं। हमारी, पुरानी रूढ़िवादी सोच है जिसका आजकल के डिजिटल इंडिया के अस्तित्व में कोई स्थान नहीं होना चाहिए। अब प्रदूषण को ही लीजिए चाहे वह वायु प्रदूषण हो, ध्वनि प्रदूषण हो या जल प्रदूषण। हम अपने अथक प्रयासों, कर्मठता व नई सोच से क्या निवारण नहीं कर सकते। री-ट्री इंडिया के मोटो से, हरित क्रान्ति से वातावरण भी शुद्ध होगा, मानसिक सन्तुलन बना रहेगा व नैराश्य जीव से परे प्रकृति के साथ समायोजन बना रहेगा। जो व्यक्ति प्रकृति में समाहित रहता है—वह सदा परमात्मा की असीम कृपा का पात्र बनता है। देवीय व गुण जैसे दया, धर्म, धैर्य, करुणा व सहनशीलता स्वयं उसके खजाने में भरे रहते हैं। तो आइये त्यौहार, जन्मदिन या शादी की सालगिरह पर उपहार न देकर पौधे लगाएं और वातावरण को प्रदूषित होने से बचाएं। जल—संरक्षण करना हमारा मूलभूत कर्तव्य है। आओ हम सभी यह संकल्प लें—

“जल की एक बूंद भविष्य निधि है, जल बिन जीने की नहीं कोई विधि है,  
जल की एक एक बूंद बचाने में हम अपने प्राण लगाए,  
शस्य श्यामला धरती को रेगिस्तान न बनाएं,  
जल ही जीवन है इसे व्यर्थ न गवाएं।”

यही संकल्प हमारे अभीष्ट मनोरथ को पूरा करेगा। हमें हिम्मत से नागरिकों को जागरूक करना है और जागृत होना है। अधिकारों और कर्तव्य का चोली—दामन का साथ है। आओ हम पूरे जोश व जुनून के साथ इन समस्याओं का द्रुतगति से पराश्रित न होकर समाधान करें।

“दूसरों के मांझी को क्यों आवाज दें हम,  
जब अपने ही लहू से बेड़ा बचा सकते हैं हम,  
वह चाहे रण हो या शमशान,  
हर धुन पर गीत गा सकते हैं, हम।”

आध्यात्मिक उन्नति के लिए भी हम पराश्रित नहीं रह सकते। यम नियम, आसन, प्रत्याहार, प्राणायाम, धारणा, ध्यान, साधन और समाधि से स्वरूप का दिव्य व अलौकिक दर्शन करके परमानंद की प्राप्ति कर सकते हैं। यात्रा बिन्दु से शुरू होके सिन्धु तक जाती है। मानव अमृत वर्षा से आत्मविभोर होकर, यकायक उद्दोलित होकर पुरुषार्थ व परमार्थी इन्सान बरबस कह उठता है—अहम ब्रह्मास्मि, अहम ब्रह्मास्मि। शिवोहम, शिवोहम। तो हे—मानव तू अपने अथक प्रयत्न, अदम्य साहस, असीम उत्साह, जोश व जुनून से अपने लक्ष्य की पूर्ति के लिए परमपिता परमात्मा को भी विवश कर सकता है।

खुदी को कर बुलन्द इतना कि हर तकदीर से पहले,  
खुदा बन्दे से खुद पूछे कि बता—तेरी रज़ा क्या है।

उस दिन मेरा जीवन सफल होगा, जिस दिन मैं सारे भारतवासियों  
के साथ शुद्ध हिन्दी में वार्तालाप करूँगा।

— शास्त्राचरण मित्र

# जल संरक्षण-समस्या एवं समाधान

—जिशन खान



दुनिया की तमाम सभ्यताएं नदी के किनारे ही विकसित हुई हैं। जल ही जीवन एवं सभ्यता का आधार है। जल के बिना जीवन की कल्पना बेमानी है। आधुनिक मानव ने जल को सस्ता समझ लिया है, इसलिए हमने पानी का अंधाधुंध दोहन शुरू कर दिया है। पृथ्वी पर उपलब्ध जल एक बहुमूल्य संसाधन है तथा यह वनस्पति, जीव-जंतु, पारिस्थितिकी तंत्र एवं पर्यावरण की बुनियाद है। धरती का लगभग 75 प्रतिशत भाग जल से घिरा है, लेकिन इसमें से मात्र 1 प्रतिशत ही मानव उपयोग हेतु उपलब्ध है। जल संकट विकराल रूप धारण करता जा रहा है तथा पूरे विश्व समेत इसका असर भारत के आधुनिक शहर जैसे दिल्ली, मुंबई, कोलकाता तथा चैन्नई में साफ महसूस किया जा सकता है। नीति आयोग 2018 रिपोर्ट के अनुसार 55 प्रतिशत कुएं सूख गए हैं। भू-जल प्रकृति की मनुष्य जाति को अनमोल सौगात है तथा प्रकृति ने हजारों सालों से पानी की उपलब्धता बनाए रखी है।

कारण— मानव समाज ने उत्पादन और मुनाफे की होड़ में गैर-जिम्मेदाराना तरीके से इसका इस्तेमाल शुरू कर दिया है।

1. जलवायु परिवर्तन 2. ग्लोबल वार्मिंग 3. औद्योगिकीकरण एवं शहरीकरण 4. जनसंख्या वृद्धि 5. पेड़ों की कटाई 6. लापरवाही

आज के इस भोग विलासिता पूर्ण माहौल में, पानी की जरूरत बढ़ चुकी है। हमें दैनिक कार्यों के लिए पानी की जरूरत है।

ग्रीन हाउस गैसों के अत्यधिक उत्सर्जन ने जलवायु परिवर्तन को बढ़ावा दिया है जिससे वर्षा के आगमन एवं बरसने में असामान्य परिवर्तन हुआ है। अत्यधिक वर्षा होने के कारण जो पानी जमीन से रिसता हुआ, भू-जल का हिस्सा बन जाता था वो अब सीधे समुद्र में जा रहा है।

औद्योगिक उत्पादन में जल के अंधाधुंध दोहन ने मानव जाति के लिए मुसीबत खड़ी कर दी है।

भू-जल का ज्यादा इस्तेमाल 85 प्रतिशत खेती में, 10 प्रतिशत उद्योग में तथा 5 प्रतिशत घरों में किया जाता है। तालाबों, झीलों तथा जलाशयों पर अतिक्रमण भी इसका कारण है।

पानी का अत्यधिक दुरुपयोग — पानी के कारखानों में जहां पानी की बोतलें तैयार की जाती हैं, वहां लाखों गैलन पानी बर्बाद होता है।

जल प्रदूषण तथा औद्योगिक इकाइयों के भारी तत्वों जैसे आर्सेनिक



एवं लैंड जैसे जहरीले पदार्थों ने इस समस्या को भयंकर रूप दे दिया है। पानी की कमी साल दर साल बढ़ती जा रही है। पानी के सीमित संसाधनों पर अत्याधिक दबाव है। हमें यह स्वीकार करना पड़ेगा कि वाकई जल संकट एक समस्या है। हमें इसे सरकारों पर डालने के बजाय इसके “संरक्षण एवं कुशल प्रबंधन” की जिम्मेदारी खुद लेनी पड़ेगी।

समाधान— पानी को सहेजने का भाव हमारी परंपराओं में अन्तर्निहित है इसलिए हमें अपनी परंपराओं के साथ जलाशय, तालाब एवं कुओं का भी जीर्णोद्धार करना पड़ेगा।

किसानों को फसल चयन तथा सिंचाई के तरीके बदलने पड़ेंगे जैसे परंपरागत सिंचाई छोड़कर ‘टपक सिंचाई’ का प्रयोग करें।

पारंपरिक पानी सहेजने की तकनीक को अपनाना होगा जैसे—

बांस पद्धति सिंचाई—असम

जोहड़, कुंड, बावड़ी— उत्तरी भारत

आहार—पाचन—बिहार, झारखंड

इन परंपरागत जल संरक्षण पद्धतियों को जीवित करना होगा, जिन्हें हमने विकास के नाम पर पाट दिया है।

अधिकाधिक वृक्षारोपण करने होंगे।

जल संग्रह जलाशय बनाने जिनसे पानी को इक्छा कर भू—जल को बढ़ाया जा सके।

कुशल प्रबंधन, जन—समूह भागीदारी तथा उन्नत तकनीक “इजराइल एवं मलेशिया” जैसे देशों से सीखनी होगी कि कैसे उन्होंने पानी का सदुपयोग किया है।

सार्थक नीतियों तथा कड़े कानून के द्वारा सरकार को जागरूकता फैलानी होगी जिसमें समाज का हर तबका शामिल हो।

वर्षा जल संचयन जिस में वर्षा जल को स्वच्छ बनाकर भू—जल तक पहुंचाया जाता है। सभी सरकारी दफ्तर, स्कूल, घर तथा सभी इमारतों को इसके दायरे में लाना चाहिए।

पेयजल की समस्या अनेक समस्याओं को जन्म देती है। हमारे पूर्वज पानी को बचाने का यदि निरंतर प्रयास करते थे। धीरे—धीरे यह समस्या पूरे भारत को अपनी पकड़ में लेती जा रही है, अगर अब भी हमने जीवन—प्रणाली नहीं बदली तो वो दिन दूर नहीं जब इस ग्रह से पानी के विलुप्त होने के कारण जीवन का अस्तित्व ही समाप्त हो जाएगा। हमें अपनी जिम्मेदारी समझनी होगी तथा पानी का सदुपयोग अपनी आने वाली पीढ़ियों को भी सिखाना होगा। हमारे द्वारा बचाई गई पानी की एक—एक बूंद उनके लिए समुद्र बन सकती है। पानी के प्रति हमें अपना यह रवैया, बदलना होगा, पानी भी यह कहता होगा—  
“जिन लोगों को आसानी से मिल जाता हूं मैं,  
वो सोचते हैं, बहुत सस्ता हूं मैं।”



अतः समझदारी पानी को बचाने में तथा इस जल—संरक्षण को एक जन—आंदोलन में बदलने की है, क्योंकि पानी इस संसार की सभी वस्तुओं से महंगा है अर्थात् अनमोल है।

# हां, हिंदी मां, मेरी है

—दिनेश कुमार तिवारी



विश्व की प्रायः सभी भाषाओं में 'मां' शब्द की ध्वनि 'म' से प्रारंभ या अंत होती है। मां, माता, मम्मी, अम्मा, अम्मी, माताश्री, ममी सा, मदर....। यह ध्वनि हिन्दी के वर्ण 'म' की है। हिन्दी सभी भाषाओं में प्रत्यक्ष या परोक्ष रूप से व्याप्त है।

'मां' अतुलनीय है। दुनिया का कोई भी संबंध 'मां' से प्यारा व अत्यन्त निकट नहीं हो सकता। इस धरती पर आने के लिए जो गर्भ-गृह मिला वह मां के शरीर में ही था। यदि मां वह स्थान उपलब्ध नहीं कराती तो हम में से कोई भी इंसान इस धरती पर आ नहीं सकता था। इंसान क्या जानवरों व पक्षियों में भी मां का स्थान व प्यार सर्वोपरि है। 'मां' मां के साथ-साथ प्रथम शिक्षक, गुरु, संरक्षक व स्वामिनी भी है। जन्म लेने के पश्चात् या बाल्यकाल में किसी की मां शरीर छोड़ दे तो उस बालक का जीवन कैसा हो जाता है, यह सभी को ज्ञात है। ठीक इसी प्रकार हम सभी भारतवासियों के लिए हिन्दी भी 'मां' है। मातृ भाषा है।

भारत के विभिन्न राज्यों की भाषाएं अलग-अलग हैं। ऐसे में अपने राज्य में जन्में व्यक्ति की मातृ-भाषा उस राज्य की भाषा हो सकती है किंतु उस अवस्था में हिन्दी बड़ी मां का कर्तव्य निभाती है। बड़ी मां की उम्र या अनुभव अपनी सगी मां से निःसंदेह बड़ा ही होता है। मां के साथ-साथ मां सी (मौसी) का भी बड़ा महत्व होता है। मासी या मौसी जो अपनी सगी मां की सगी बहन/बहने होती है। उसकी तरह भारत की अन्य भाषाएं हमारे लिए मां या मासी होती हैं, सम्माननीय होती हैं।

अंग्रेजी भाषा का स्थान आन्टी के जैसा होता है जो पड़ोस में रहती है या दूर देश में रहती है। उसके साथ रक्त-संबंध नहीं होता है। वह केवल स्वार्थ वश आती है, औपचारिकतावश हाल-चाल पूछती है और खा-पीकर चली जाती है। हमारे व्यक्तिगत सुख दुःख से उसका कोई वास्तविक सरोकार नहीं होता है।

भारत में, भारतीय भाषाओं में कोई मत-भेद या प्रतियोगिता नहीं है, हिन्दी की होड़ या प्रतियोगिता केवल अंग्रेजी के साथ है। अंग्रेजी आन्टी, दूर देश से हमारे घर (भारत में) आई, रहने की शरण मांगी और आज पूतना जैसे जहर पिलाने का कार्य शुरू कर दिया है। हिन्दी मां का दूध पीकर अंदरूनी ताकत बढ़ती है और अंग्रेजी आन्टी का जहर रूपी दूध पीकर मानसिक विकृति आती है। आज यह जहर इतना फैलता जा रहा है कि अधिकांश भारतीय इससे कुप्रभावित होते जा रहे हैं, अंग्रेजी मानसिकता के गुलाम बनते जा रहे हैं।

जब कोई विद्यार्थी नौकरी पाने के लिए तैयारी करता है तो वह अपने विषम/प्रश्न-पत्रों पर पकड़ पाने या उसकी गहनता में जाने के लिए हिन्दी का सहारा लेता है। यहां तक कि बड़ी-बड़ी परीक्षाओं में साक्षात्कार के दौरान अपनी विवेचना/विचारों को स्पष्ट करने के लिए हिन्दी का सहारा लेता है। हिन्दी

में अपनी मूल भावना को प्रकट करने के लिए अवसर ढूँढता है और जब वह चयनित हो जाता है, बड़ा अधिकारी बन जाता है, तो वह अपनी हिंदी मां की उपेक्षा करना शुरू कर देता है। अपने जीवन चर्या में अंग्रेजी आन्टी का बहुतायत प्रयोग करता है। कुछ वर्षों के पश्चात तो उसकी ये हालत हो जाती है कि उसको हिंदी में एक पत्र या एक टिप्पणी लिखना तो दूर उनको हिंदी में हस्ताक्षर करना भी मुश्किल हो जाता है।

ऐसे बड़े अधिकारी या कर्मचारी या व्यापारी वैसी ही श्रेणी में रखे जा सकते हैं जो अपनी मां को किसी बड़े गोष्ठी, सेमिनार या सार्वजनिक अवसर पर (अपनी सगी मां को) सबके सामने लाने में शर्म महसूस करते हैं। उनको किसी वृद्धआश्रम में रखना पसंद करते हैं। वे ऐसा सोचते हैं कि मां पुराने जमाने की है, उसको साथ रखने से दुःख ही मिलेगा, बेइज्जती ही मिलेगी। यह हमारे साथ बाहर जाने के काबिल नहीं है। यदि घर पर कोई आ जाये तो मां को उनसे मिलवाने में शर्म महसूस करते हैं। इस श्रेणी के लोग हिंदी मां के साथ भी ऐसा ही करते हैं। यदि अतीत में



देखें तो आर्य ही भारत के मूल निवासी थे और उनकी भाषा संस्कृत थी। वास्तव में हिंदी मां ने समय के साथ अपना अलंकार, आभूषण, रंग रूप बदला और इनको 'संस्कृत' से 'हिंदी' बनना पड़ा वह भी हम बच्चों के लिए। यदि संस्कृत भाषा के लिपि को देखें तो वह देवनागरी ही है। विराम (।), उपसर्ग (:), हलन्त (.), अनुस्वार (.) अलंकार, व्याकरण, शब्दार्थ आदि आभूषणों को हिंदी मां ने उत्तर दिया और कालान्तर में संस्कृत मां ने हिंदी मां का रूप धारण किया। इसका मुख्य कारण यही था कि भारत मां के असंख्य लायक बच्चे जिन्होंने वेद, पुराण, महाकाव्य (महाभारत, रामायण, श्रीमद्भागवत गीता) जो संस्कृत में रचे गये और पढ़े जा रहे उनको अब संस्कृत में पढ़ना व समझना नहीं आ रहा था। वैसे तो इन ग्रंथों का महत्व व स्थिति ऐसी है कि एक बार जो सही ढंग से पढ़ ले उसका जीवन दिव्य बन जाए। इनके हर पद्य/ऋचा/गद्य/श्लोक/दोहा एक सूत्र के तरह हैं, एक मंत्र की तरह है। संस्कृत में रचित 'चरक संहिता' में सभी रोगों का कारण व निवारण वर्णित है, जिस पर विदेशी वैज्ञानिक व डाक्टर शोध करते हैं। और इसी के आधार पर नयी-नयी औषधियां, तकनीक का विकास व अन्वेषण करते हैं। उनको संस्कृत पढ़ना इतना कठिन नहीं लगता जितना नये आविष्कार व खोज करना कठिन लगता है।

हमारे लिए मां को संस्कृत से हिंदी का रूप धारण करना पड़ा, अब उस मां को इतना मजबूर न करें कि इनको 'हिंदी' से हिंग्लिश बनना पड़े। माँ ने हमारे लिए अपने आप में इतना परिवर्तन किया, तो क्या हम इतने निष्ठुर व स्वार्थी हैं कि अपने में थोड़ा सा भी परिवर्तन न कर सकें। हम हिंदी में प्रत्येक दिन कुछ न कुछ लिखें। घर में, कार्यालय में, दुकान पर या कहीं पर कार्य करते हैं अपनी मां के सम्मान में अवश्य ही कुछ न कुछ लिखें। भले ही 'हस्ताक्षर' जैसा छोटा शब्द ही क्यों न हो, यदि अंग्रेजी में आवश्यक न हो तो इसे हिंदी में ही किया करें। हम हिंदी तो बोलते हैं, वो बहुत अच्छा है लेकिन यदि हिंदी में कुछ भी लिखते हैं तो इससे मां को सम्मान बहुत बढ़ जाता है। किसी चीज़ का साक्ष्य मांगने के लिए प्रायः लोग यही कहते हैं कि यह चीज़ कहाँ लिखी है दिखाओ अर्थात् लिखना बहुत आवश्यक है। हमारी भाषा और हम सभी भारतीय विश्व के सभी भाषाओं और मनुष्यों से अच्छे हैं इसका हम सभी को बहुत गर्व होना चाहिए कि इसका प्रमाण प्रकृति ने भी दिया है। भारतीयों को अपना मनोबल बहुत ही

ऊंचा रखना चाहिए कि हम सभी से श्रेष्ठ है। हमें प्रकृति ने सर्वश्रेष्ठ बनाया है। हम इतने अमीर थे कि चोर, डाकू रूपी विदेशी आते रहे हमें लूटते रहे, किन्तु आज भी हम सीना तानकर खड़े हैं। हम दिन प्रति दिन प्रगति की ओर अग्रसरित हो रहे हैं। हम अपने पूरे परिवार के साथ एक ही छत के नीचे रहते हैं। मां हमारी पूजनीया है। 'आन्टी' आयेंगी और चली जायेगी। मां साथ भी है और रहेगी। हिंदी मां के बिना हम नहीं रह सकते, आगे बढ़ नहीं सकते। हमें अपनी सोई हुई शक्तियों को जगाना है। अपने स्वमान को, मनोबल को बढ़ाना है।

श्री रामचरितमानस' में एक प्रसंग आता है कि जब हनुमान जी को कार्य सौंपा गया कि सीता जी का पता लगाने के लिए वे समुद्र पार करके लंका में जाये। यह सुनकर हनुमान जी को लगा कि मैं तो बन्दर हूं मैं कैसे समुद्र को पार कर सकता हूं, और हीनता से ग्रसित हो बैठे। तब जामवंत जी ने उनको उनकी सोई हुई शक्तियों की याद दिलाई, यह कहते हुए कि.....का चूप साधी रहे बलवाना....." हनुमान जी को तब अपनी शक्ति याद आयी और उड़ कर लंका पार कर दी जैसे कोई कूदकर एक चौड़ी नाली पार कर लेता है। ठीक इसी तरह कुछ भारतीय भी 'हिंदी' भाषा को एक पिछड़ी हुई या कम महत्व वाली भाषा समझकर किनारा करते जा रहे हैं।

जिस नर को निज देश, निज भाषा का अभिमान नहीं

वह नर नहीं पशु निरा है और मृतक समान है'

भारत में कितने उच्च कोटि के विद्वान व लायक बच्चे हैं इस घटना से स्पष्ट हो जायेगा। एक बार भारत के एक विद्वान संत यूरोप में गये तो उनका स्वागत करने के लिए जो बड़ा प्रतिनिधि आया वह अंग्रेजी में हैलो, वेलकम....आदि शब्दों से स्वागत/अभिवादन कर रहा था, उसकी प्रतिक्रिया में भारतीय संत हिंदी में आशीर्वाद, शुभ वचन बोल रहे थे। वह प्रतिनिधि समझा कि शायद इनको अंग्रेजी नहीं आती और उसने हिंदी में बोलना शुरू किया, उसकी प्रतिक्रिया में भारतीय संत ने अंग्रेजी में जवाब देना शुरू किया। इतनी शुद्ध व धाराप्रवाह अंग्रेजी सुनकर उस प्रतिनिधि ने आश्चर्य चकित होकर पूछा कि आप इतनी अच्छी अंग्रेजी बोलना जानते हैं जितना मैं भी नहीं जानता फिर आप प्रारंभ में मुझसे हिंदी में ही क्यों प्रतिक्रिया कर रहे थे। भारतीय संत ने जवाब दिया, जब तक आप अपनी मां का आदर कर रहे थे, मैं भी अपनी मां का आदर कर रहा था। जब आपने मेरी मां का आदर करना शुरू किया तब तक, मैंने भी आपकी मां का आदर करना शुरू कर दिया।

हिंदी मां ने ही आज हमें इस मुकाम पर पहुंचाया है कि अपना जीविकोपार्जन सम्मान पूर्वक कर रहे हैं। हमें उन बच्चों की तरह नहीं बनना है, अपने बचपन के दिन नहीं भुलाने चाहिए।

जो बच्चे बचपन में आपस में अपने भाइयों से लड़ते थे कि मां मेरी है, मां मेरे पास रहेगी, मैं मां के पास सोऊंगा, मैं मां के हाथ से खाऊंगा, वही बच्चे बड़े होने पर, बड़े पद प्रतिष्ठा पाने के उपरान्त मां को घर से निकाल देना चाहते हैं। बड़ा भाई कहता है, मां छोटे भाई के साथ रहे तो अच्छा, छोटा भाई कहता है बड़े भाई के साथ ही मां अच्छे से रहेगी। मेरे पास जगह नहीं है, घर छोटा है। यह नाना प्रकार के बहाने बनाते हैं। मां को अपने साथ रखना मेरी जिम्मेदारी नहीं है। बड़े भाई की जिम्मेदारी है। वास्तव में घर छोटा नहीं, उनका दिल छोटा है। उनकी बुद्धि छोटी है वे यह नहीं समझते कि माँ देवी हैं वह सब कुछ बच्चों के लिए सहन करती है, वह बच्चों की खुशी के लिए घर से बाहर भी जाना पसंद करती है।

भारत की मां तो ऐसी होती है कि यदि बच्चे को उसकी मां का कलेजा भी चाहिए तो वो बिना किसी संकोच के दे सकती है। बच्चा वही कलेजा लेकर बाहर भागता है और जल्द-बाजी में रास्ते में गिर जाता है, चोट लग जाती है, तो मां का कलेजा वही पूछता है कि बेटा कहीं चोट तो नहीं आयी। तू ठीक तो है न। मां का कटा हुआ कलेजा भी अपने बच्चे के लिए जीवंत हो उठता है।

हिंदी मां भी ऐसी ही है क्योंकि 'मां' है। जब बच्चों को जरूरत होती है, उनको सब कुछ प्रदान करवा देती है। सोचने, समझने, तर्क करने की जब भी आवश्यकता होती है, तो हिंदी मां झट से बच्चों के मन-बुद्धि में प्रवेश कर सहारा दे देती है। वे बच्चे इसी का रूपान्तरण अंग्रेजी में कर अपना प्रभाव जमा लेते हैं। हिंदी मां जड़ है, तना है, जड़ तने के बिना फल-फूल कभी नहीं आ सकते।

यह बिल्कुल सत्य है कि हम भारतीय हिंदी के साथ-साथ कई देशी और विदेशी भाषायें बोलते हैं और बोल सकते हैं, किन्तु विदेशियों में यह ताकत नहीं कि वे अन्य भाषा बोल सकें। इससे सिद्ध होता है कि हमारा देश महान है, हम भारतीय महान हैं हमारी भाषा महान् है।

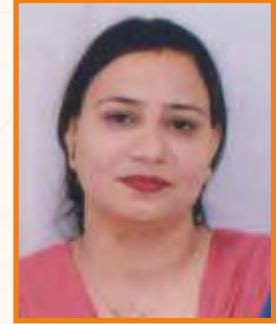
हम लोग सोचते तो हिंदी में हैं किन्तु लिखते व बोलते अंग्रेजी में हैं। अंग्रेजी में लिखना या बोलना कोई गुनाह नहीं है, किन्तु इसका उद्देश्य यदि अपनी शक्ति का प्रदर्शन, श्रेष्ठ व सर्वोपरि साबित करने के लिए किया जाए तो यह उचित नहीं है। हिंदी 'मां' है और घर में रहती है, गुप्त कार्य करती है। अंग्रेजी 'आंटी' बाहर रहती है और सार्वजनिक प्रदर्शन करती है। अब, इस प्रदर्शनकारी प्रवृत्ति को दूर करने की आवश्यकता है।

कुछ लोग यह कहते हैं कि मुझे हिंदी नहीं आती। लेखक यह समझता है कि वह शायद यह कह रहे हैं कि मुझे मां की कदर नहीं आती। हिंदी 'माँ' है। बच्चा कितनी भी तोतली भाषा में बोले माँ समझ जाती है कि बच्चे का भाव क्या है, आशय क्या है और आवश्यकता क्या है, वह क्या संप्रेषित करना चाहता है। आप सभी पाठकगणों से निवेदन है कि आप आज से अभी से जो, भी पहला शब्द/वाक्यों की शुद्धि/अशुद्धि में न जाए। यह झिझक ही आपको अपनी हिंदी मां से दूर करती जा रही है। आपको जब अंग्रेजी में कोई शब्द/वाक्य नहीं आता है तो शब्दकोश देखते हैं या किसी से पूछते हैं तो ऐसा हिंदी के लिए भी कर सकते हैं। हमें तो उन लायक बच्चों की श्रेणी में आना है जो गर्व से कहते हैं, हां हिंदी मेरी मां है। चाहे बड़ा भाई हो या छोटा भाई मां मेरी जिम्मेदारी है। मां मेरे साथ रहेगी। जिस मां के सवा-सौ करोड़ बच्चे हैं उसकी ऐसी उपेक्षा की स्थिति अब नहीं होने देंगे। हम सभी लायक बच्चे हैं, और यदि आप लेखक से सहमत हैं तो आप भी न केवल कहिए कागज़ पर लिख लिख कर सिद्ध कर दें कि हां हिंदी मां मेरी है।

जितना और जैसा ज्ञान, विद्यार्थियों को उनकी  
जन्मभाषा में शिक्षा देने से, अल्पकाल में हो सकता है उतना  
और वैसा पराई भाषा में, सुदीर्घ काल में भी होना संभव नहीं है।  
-घनश्याम सिंह

# तनाव के कारण

—सीता देवी



लेख लिखने से पहले मैं आप सबको नमस्कार करती हूँ। आजकल खबरें तो सभी पढ़ते हैं। चाहे अखबार के माध्यम से चाहे मोबाइल के माध्यम से या फिर टी.वी. के माध्यम से अधिकतर सुनने में यही आता है। मनुष्य अपने जीवन में दुःखी होकर आत्महत्या कर लेते हैं। इसका कारण क्या है? 'तनाव' जी हां आपने सही सुना यह तनाव ही है जो मनुष्य को बदल कर रख देता है। मनुष्य एक ऐसा रूप धारण कर लेता है जैसा वह पहले कभी था ही नहीं।

अगर देखा जाए आजकल अधिकतर लोग तनाव का जीवन जी रहे हैं सब कुछ होते हुए भी इन्सान हमेशा किसी न किसी परेशानी से घिरा ही रहता है और यह परेशानी ही हमारे लिए तनाव का कारण बन जाती है और उस तनाव के कारण ही हमें कई रोग लग जाते हैं। जैसे: नींद न आना, बी.पी., भोजन न पचना, हमेशा उदास रहना, सबसे अलग—2 रहना, चिड़चिड़ापन होना, बेवजह किसी बात पर गुस्सा आना। बहुत सारी बीमारियां हमारे शरीर को लग जाती हैं। कभी परिवार की कभी कार्यालय के कार्य की बातों पर हमेशा सोचते ही रहते हैं और आज इस तनाव का शिकार छोटे—छोटे बच्चे भी हो गये हैं क्योंकि आजकल की भागदौड़ भरी जिंदगी में हम अपने बच्चों को समय नहीं दे पा रहे हैं। जिसकी वजह से बच्चे मोबाइल या टी.वी. का सहारा लेते हैं। बच्चे नशे में पड़ जाते हैं। आजकल हमारे घर के हालात ऐसे हैं कि अगर घर में पांच सदस्य हैं, तो वे पांचों ही अपने—अपने मोबाइल में लगे हुए या फिर कोई टी.वी. सीरियल देखने में लगे हुए हैं। पहले जमाने में रात को परिवार के सभी सदस्य इक्ठ्ठे होकर बैठते थे और आपस में अपनी समस्या का हल निकालते थे। लेकिन आजकल हर कोई यही कहता है कि यह मेरी समस्या है इससे आपको क्या मतलब, तो ये अहंकार भी हमारे लिए तनाव का कारण बन गया है। तनाव से बचने के लिए हमें छोटी—छोटी बातों का ध्यान रखना चाहिए। सुबह जल्दी उठना चाहिए। सुबह जल्दी उठने के लिए हमें जल्दी सोने की आदत डालनी चाहिए। सुबह जल्दी उठने से हम अपने जरूरी काम समय पर कर सकेंगे। जिससे हम सारा दिन तनाव मुक्त रहेंगे। देर तक सोना—अगर हम देर तक सोते हैं तो हमें अनेक बीमारियां लगती हैं। व्यायाम करना— हमें अपने शरीर को ठीक रखने के लिए आधा पौना घण्टा व्यायाम जरूर करना चाहिए।



प्लान—करना— अगर हमें कहीं भी जाना है उसकी पहले योजना बनानी चाहिए।

मेडिटेशन करें— इससे भी तनाव में काफी हद तक राहत मिलती है। इस भागदौड़ को छोड़ कर हमें अपने समय का सदुपयोग करना चाहिए। टी.वी. सीरियल और मोबाइल को छोड़ अपने परिवार को ज्यादा से ज्यादा समय देना चाहिए क्योंकि, हर बीमारी तनाव से, तनाव का इलाज परिवार से।।

# वोटिंग

—हरबंस कौर ओबराय



मौसम कई प्रकार के होते हैं, जो हर साल आते हैं। लेकिन चुनाव का मौसम पांच वर्ष बाद आता है। सभी पार्टियां अपने-अपने उम्मीदवार चुनाव मैदान में उतारती हैं और अपने उम्मीदवार को जीतवाने का प्रयत्न करती हैं, जो जीत गया तो वाह-वाह, जो बेचारे हार गये, तो उनकी जमानत जब्त हो जाती है।

चुनाव से संबंधित एक बहुत ही रोचक किस्सा है। काफी साल पहले हम राजपुरा (पटियाला) में रहते थे और चुनाव का चारों तरफ शोर था, जिस दिन वोट डाला जाना था, लोगों में उमंग और उत्साह था। सभी अपने-अपने मतदान केन्द्र पर वोट डालने जा रहे थे, मतदान केन्द्रों पर लम्बी-लम्बी कतारें लगी हुई थी। मैं वोट डालकर अपने घर आ चुकी थी।

चुनाव के समय मेरी छोटी बहन मेरे पास राजपुरा रहने के लिए आई हुई थी, और उसकी आयु करीब 22 वर्ष थी। हमारे जानकार कैप्टन साहब चुनाव लड़ने के लिए खड़े थे। मैं अपने घर आकर काम कर रही थी, तभी मकान मालकिन ने कहा कि आपकी बहन को कैप्टन की मिसेज ले गई है। मेरा मन बहुत घबराने लगा कि उसका तो वोट भी नहीं फिर कैसे इसे आन्टी मतदान केन्द्र पर ले गई हैं।

मैंने चुनाव केन्द्र पर जाकर देखा कि मेरी बहन जोर-जोर से रो रही है, चुनाव अधिकारी उससे पूछ रहे थे। मैं राजपुरा स्कूल में स्पोर्ट्स अध्यापिका थी, उस स्कूल में अमीर घरों के बच्चे पढ़ते थे। मुझे जो बात बताई गई कि यह वोट डालने आई हैं, हुआ ऐसा कि मिसिज कैप्टन ने किसी और महिला के वोटर कार्ड की स्लिप उसको दे दी थी। जाली वोट डालने के कारण जेल का चक्कर और जमानत का चक्कर पड़ गया। मैं अधिकारी के पास गई और उनसे बात की। तहसीलदार और एस.एच.ओ. पुलिस के बच्चे मेरे पास पढ़ते थे। तहसीलदार साहब ने बात की और कहा कि यह कुछ मानसिक तौर पर बीमार लगती है, मेरी बहन को घर भेज दिया। मेरे साथ घर आने के बाद मेरी बहन घर से बाहर नहीं निकली। गलती मेरी बहन की नहीं कैप्टन आन्टी की थी, खैर जो हुआ सो हुआ। अब जब भी चुनाव आते हैं, मुझे वह किस्सा याद आ जाता है।



## कार्यालयीन गतिविधियाँ



गणतंत्र दिवस के दौरान सामूहिक गान प्रस्तुत करते हुए कार्यालय के कर्मचारीगण



गणतंत्र दिवस के दौरान बाल कलाकार को पुरस्कृत करते हुए श्री अजायब सिंह,  
महालेखाकार/मुख्य अतिथि

## कार्यालयीन गतिविधियाँ



अंकुर पत्रिका के 112-113वें अंक का विमोचन करते हुए  
उपमहालेखाकार (प्रशासन, लेखा, पेंशन)



हिन्दी पखवाड़े के दौरान हिन्दी शब्द-ज्ञान प्रतियोगिता में भाग लेते हुए  
कार्यालय के कर्मचारीगण

## कार्यालयीन गतिविधियाँ



हिन्दी पखवाड़े के दौरान बाल कलाकार को पुरस्कृत करते हुए श्रीमती अश्वती वी.एस., प्रवर उपमहालेखाकार (प्रशासन )



हिन्दी पखवाड़े के दौरान वर्ष पर्यन्त हिन्दी में सर्वाधिक कार्य करने वाले अनुभाष को पुरस्कृत करते हुए उपमहालेखाकार (लेखा तथा पेंशन स्कंध)

## कार्यालयीन गतिविधियाँ



आई.ए. एण्ड ए.डी नॉर्थ जून हॉकी टूर्नामेंट 2019-20 कार्यालय महालेखाकार (ले. व ह.)  
पंजाब, चण्डीगढ़ द्वारा आयोजित किया गया



हिन्दी पखवाड़े के समापन समारोह के दौरान हिन्दी में सर्वाधिक कार्य करने वाले  
अनुभाग को पुरस्कृत करते हुए उपमहालेखाकार (पेंशन तथा लेखा)

# कविता

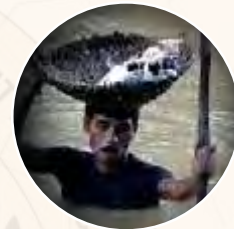
# इंसात और इंसानियत

—जिशात खान

इंसात तूने कैसा समाज बना दिया  
बाप को बेटे से, भाई को भाई से लड़ा दिया  
ना छोड़ी पाकीज़गी तूने खून के रिश्तों में  
तूने खून को पानी से भी सस्ता बना दिया  
ऐ इंसात तूने कैसा समाज बना दिया !



ना अब मुझे गरीबों का दर्द दिखाई दिया  
ना तूने बेसहारों को सहारा ही दिया  
इंसानियत को लड़ाने के लिए तूने क्या क्या न किया  
इस उधेड़बुन में तूने इंसानियत को ही भुला दिया  
ऐ इंसात तूने कैसा समाज बना दिया !



तू न करता है इज्जत बड़ों की, ना ही तूने छोटों को प्यार दिया  
जहां जरूरत पड़ी तेरी किसी को,  
तूने उसे वहीं दुत्कार दिया  
तू करता है चोट लोगों के दिल पे  
ये पता नहीं तुझे किसने सिखला दिया  
ऐ इंसात तूने कैसा समाज बना दिया !



अब भी सच्चे मन से थाम ले एक दूसरे का हाथ  
इतिहास गवाह है, एकता ने मानवता को अर्श पे पहुंचा दिया  
छोड़ दे माल इकट्ठा करने की सनक  
पता नहीं इस सनक ने कितनों का जीवन मिट्टी में मिला दिया  
ऐ इंसात तूने कैसा समाज बना दिया !



कर लो दिलों को साफ, मिटा दो दिलों से ईर्ष्या  
पता नहीं इस बेवफा जिंदगी का कब बुझ जाए दिया  
मां—बाप का मान कर, अच्छे काम कर  
जिससे हो इंसानियत का भला !



तू चाहे तो अब भी संभल सकता है  
रात को दिन कर सकता है  
नाउम्मीद ना होना कभी मुश्किलों से  
क्योंकि इस समाज को खूबसूरत  
सिर्फ तू ही बना सकता है !

# शुरूआत नए कल की

—विनय कुमार गर्ग



शायद जल बड़ा ही बेमोल है  
तभी इसलिए शायद  
छत की टंकियों के ओवरफ्लो में  
तो कभी जमींदोज पाइपों की लीकेज में,  
कभी अमीरों के लॉन में  
तो कभी कलबों के तरण—तालों में  
बेचारगी से बहता है।



शायद जल बड़ा ही लाचार भी है  
तभी हर कोई अपनी गंदगी इसमें बहा देता है  
दुनिया में जल के स्रोत भी हैं अनंत शायद  
तभी परवाह नहीं हमें कल की  
आने वाली पीढ़ियों हेतु जल की।

क्या सही में जल है महत्वहीन  
नहीं है गौर ए काबिल  
तभी करते हैं दोहन इसका बेदर्दी से  
जल क्या है?....  
जल जीवन है  
जल है, तो कल है।  
आज बचाएंगे तो कल पाएंगे।

जल की कीमत पूछनी ही है तो पूछो उन....  
कंक्रीटों के जंगल में रहने वाले बाशिंदों से  
महाराष्ट्र, तमिलनाडु, मध्य प्रदेश और ना जाने  
कितने ही राज्यों के गिरते जल स्तर से  
जल के लिए प्यासे मरते मवेशियों से  
दो बूंद जल के लिए तड़पते पंछियों से  
मीलों दूर से ढोकर लाने वाले महिलाओं से, बच्चों से  
चिलचिलाती धूप में झुलसते राहगीरों से  
रेगिस्तान के तपते समंदर में झुलसते जीवन से  
लापरवाही में यूं ही

ना खो देना ये बेमोल नेमत कुदरत की  
अन्यथा जल जाएगा विश्व  
तीसरे विश्वयुद्ध की आग में।

स्तर गिरता जा रहा है सर्वत्र भूजल का  
वर्षा का जल, सड़कों से गंदे नालों में  
और गंदे नालों से खारे समंदर में  
बह—बहकर होता जा रहा बर्बाद है।

माना इंसान है आज बड़ी दौड़ में  
लगा है 21वीं सदी की होड़ में  
फिर भी क्यों करें हम इंतजार  
चिड़िया के खेत चुगने का  
और धरा से जल के मिटने का

क्यों नहीं हम करते संचयन जल का  
क्यों नहीं हम बनते मितव्ययी जल का  
क्यों नहीं है मान कुदरत की अनमोल देन का  
क्यों नहीं हम सोचते कल की  
क्यों नहीं हम रोकते बर्बादी जल की  
क्यों नहीं हम करते खुद से शुरूआत नए कल की।



# बेबसी

—सुनील कुमार गुप्ता



कल्पनाओं में छुपी थी  
फर्ज के आगे झुकी थी  
मोम की मूरत नहीं थी बेबसी थी  
मन में उसके थी उमंगे  
जागती आंखों से सपने देखती थी  
बेधड़क होकर विचरना चाहती थी  
वन के भीतर बन के हिरणी  
वो कुलांचे भर रही थी  
पर किसी आखेट के चंगुल में फंस कर  
वे थकी हारी हुयी बेबस पड़ी थी  
कल्पनाओं में छुपी थी  
फर्ज के आगे झुकी थी  
मोम की मूरत नहीं थी बेबसी थी  
देख कर दरिया समंदर  
थी बहुत आतुर रहती  
मन की गहराई से अपनी नापती थी मंजिलें,  
चाहती थी वो समंदर  
और दरिया में विचरना  
चाहती थी सागरों को  
कुछ क्षणों में पार करना  
हौसलों की ले के वह पतवार  
आखिर चल पड़ी थी  
पर लहर की धार से टकरा गयी जब  
एक टूटी नाव सी बिखरी पड़ी थी

कल्पनाओं में छुपी थी  
फर्ज के आगे झुकी थी  
मोम की मूरत नहीं थी बेबसी थी  
चाहती थी आसमां में उड़ के जाना  
और क्षितिज पर  
अपनी बाहों को फैलाना  
चाहती थी  
भाल पर सूरज टिकाना  
पंख परवाजों से लेकर  
आसमां में उड़ चली थी  
पर हवाओं के उलट चलने के कारण  
हो धराशायी जमीं पर आ पड़ी थी  
कल्पनाओं में छुपी थी  
फर्ज के आगे झुकी थी  
मोम की मूरत नहीं थी बेबसी थी



# तलाश

—बनवारी लाल मीणा 'मांदड़'



दौलत कोई घर तलाश करती है  
कलम किरदार तलाश करती है

मशविरा अब किसी से क्या करें  
रुह जब खुद को तलाश करती है

कांप जाता हूं रुह से जब  
धरती आराम तलाश करती है

नजारे धुन्ध में लिपटे हैं, मगर  
नज़रे मंजिल तलाश करती हैं।

फिरकापरस्ती जिस रास्ते गुज़रे  
हर खून में रंग तलाश करती है

अपने लहरी मन मे, मैं खोया हूं  
दुनिया जहां में तलाश करती है

सच्चाई को तलाशें कैसे जब  
संवेदना आंसू तलाश करती है



# दो गज़लें

—रिंकू कश्यप



ऐ—ज़िन्दगी.....

मेरी खामोशी का इंतज़ार न कर।  
 इस दर्द—ए—दिल को  
 और बेकरार न कर।।  
 डूबती है कश्तियां  
 अक्सर पानी में बहुत सी।  
 इस डूबते माझी के  
 बचने का इन्तज़ार न कर।।  
 नम आंखों में बसा है  
 समंदर आज भी  
 इस पानी से प्यास  
 बुझाने का इकरार न कर।।  
 सुना है वक्त फिसलता है  
 अक्सर रेत की तरह।  
 उस रेत पर आशियां बनाने की  
 हसरत कभी न कर।।  
 मयखाने में मिलते हैं  
 अक्सर बहुत से जाम।  
 हर जाम से ज़िन्दगी  
 बचाने का कभी इकरार न कर।  
 तुम्हारी नफरत की आंधी ही  
 काफी है इस ज़िन्दगी के लिए।  
 इस खंज़र को मेरे  
 सीने के आर—पार न कर।।

आज इतना बेबस हूं  
 कि सह नहीं सकता।  
 कलम साथ देती है  
 पर कह नहीं सकता।।  
 दिल के ज़ख्मों को  
 फिर से कुरेदा हो जिसने।  
 उन्हीं हाथों के मरहम  
 बिना रह नहीं सकता।।  
 टूटते तारे देखे हैं  
 मैंने रातों में बहुत।  
 साथियों से बिछुड़ने का गुम  
 हर कोई सह नहीं सकता।।  
 चांद में भी दाग को  
 देखा है लोगों ने अक्सर।  
 वो चांद भी बिन चांदनी  
 के रह नहीं सकता।।  
 समंदर में कश्तियां  
 डूबती देखी हैं मैंने अक्सर।  
 पर माझी साथ दे न दे  
 ये मैं कह नहीं सकता।।  
 आज इतना बेबस हूं  
 कि सह नहीं सकता।  
 कलम साथ देती है  
 पर कह नहीं सकता।

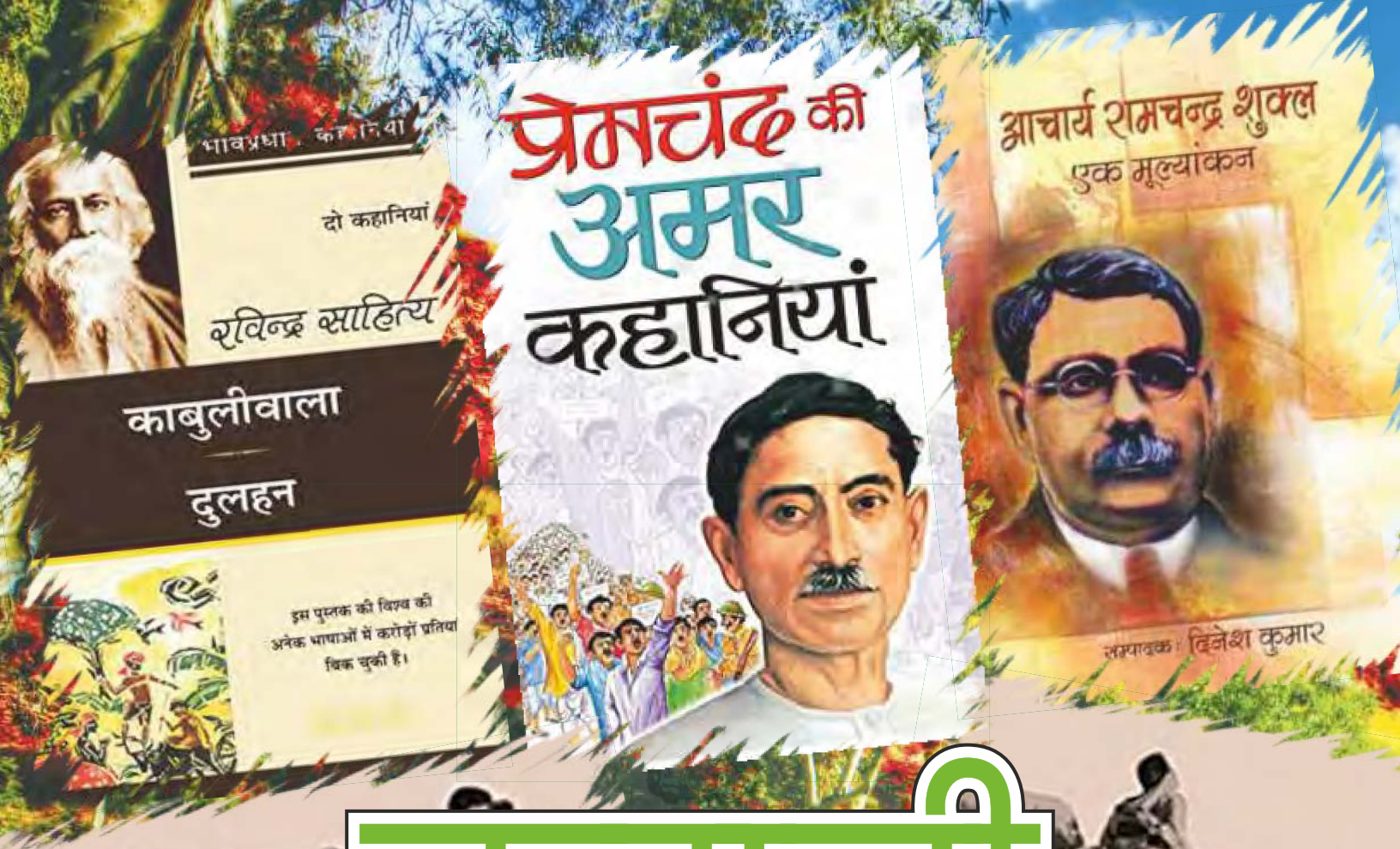
# चुटकुले

—सीमा गुप्ता



- एक वकील ने नया ऑफिस खोला, दूसरे ही दिन पहला क्लाइंट आता दिखाई दिया....  
जैसे ही क्लाइंट ऑफिस में घुसने लगा, वकील ने टेलीफोन उठाकर क्लाइंट को शोऑफ करते हुए बोला—  
'देखो रायबहादुर, तुम नाकू जी से कहो कि वह केस जीत गए हैं.....  
फिर आए हुए व्यक्ति की ओर देखकर बोला—जी कहिए मैं आपकी क्या सेवा कर सकता हूं....  
व्यक्ति हिचकिचाते हुए बोला—मेरी सेवा नहीं....मैं तो खाली आपका टेलीफोन ठीक करने आया था..।
- सोनू: तुझे सबसे ज्यादा इज्जत कौन देता है?  
मोनू: अलमारी में रखे कपड़े देते हैं।  
सोनू: वह कैसे?  
मोनू: जब भी खोलता हूं तो 2—3 कपड़े आकर कदमों में गिर जाते हैं...।
- पति अपनी पत्नी से—मेरी शर्ट को उल्टी करके प्रेस करना।  
पत्नी—ठीक है  
कुछ देर बाद....  
पति—मेरी शर्ट को प्रेस कर दिया क्या?  
पत्नी— नहीं अभी नहीं...  
पति—क्यों?  
पत्नी—अभी मुझे उल्टी ही नहीं आ रही तो उल्टी करके कैसे प्रेस करूं?  
पति बेहोश...।
- लड़का: तुम्हें मेरे अंदर सबसे अच्छी बात क्या लगती है?  
लड़की: लोग समय के साथ बदल जाते हैं लेकिन तुम नहीं बदले।  
लड़का: वह कैसे?  
लड़की: जब मैं तुमसे मिली थी तब भी बेरोजगार थे और आज भी बेरोजगार हो।
- पत्नी: अपने पुराने कपड़े डोनेट करूं क्या?  
पति: डोनेट क्या करना, फेंक दे...  
पत्नी: नहीं जी, दुनिया में बहुत सी गरीब, भूखी—प्यासी औरते हैं, कोई भी पहन लेगी।  
पति—तेरे नाप के कपड़े जिसको आएंगे वो भूखी—प्यासी थोड़ी ही होगी।

- पप्पू समोसे को खोलकर अंदर का मसाला खा रहा था।  
फेकू—अरे! तू पूरा समोसा क्यों नहीं खा रहा?  
पप्पू—मैं बीमार हूँ न... इसलिए डॉक्टर ने बाहर की चीज़ खाने से मना किया है।
- पप्पू— बताओ इंसान के बच्चों और जानवरों के बच्चों में क्या फर्क है...  
फेकू—बड़े होकर गधे का बच्चा गधा बनता है और उल्लू का बच्चा उल्लू... पर इंसान का बच्चा बड़ा होकर गधा भी बन सकता है और उल्लू भी...
- इंस्पेक्टर: इतनी क्यों पी रखी थी?  
शराबी: मजबूरी थी भैया।  
इंस्पेक्टर: कैसी मजबूरी?  
शराबी: बोतल का ढक्कन खो गया था।
- पप्पू जिस बस का ड्राइवर था वे बस नदी में गिर गई...  
रिपोर्टर— बस नदी में कैसे गिर गई?  
पप्पू— मुझे कुछ नहीं पता साहब...।  
रिपोर्टर—याद करके बताओ क्या हुआ था?  
पप्पू—जी, उस दिन कंडक्टर नहीं आया था और जब बस नदी में गिरी उस वक्त मैं पीछे वाले यात्रियों से किराया लेने चला गया था।
- फेकू को एक बार मुगलों के सैनिकों ने बेअदबी के जुर्म में पकड़ लिया और उसे अपने बादशाह के पास ले गए...  
बादशाह: इसने अपराध किया है तो इसे बंदी बना दिया जाए...।  
फेकू: नहीं, नहीं जहां पनाह ...रहम फरमाइए, मुझे बंदा बना दिया जाए..।
- टीचर: बताओ बच्चों, वास्कोडिगामा भारत कब आया था?  
चिंटू: सर्दियों में आया था।  
टीचर: बुद्धू हो क्या? तुम्हें किसने कहा कि वह सर्दियों में आया था?  
चिंटू: मैने किताब में फोटो देखी थी, उसने कोट पहन रखा था।
- पत्नी: हम दोनों में से सुन्दर कौन है?  
पति: मैं...  
पत्नी: कैसे?  
पति: तुम ब्यूटी पार्लर क्यों जाती हो...?  
वो तो भगवान का शुक्र है कि पति अक्सर सुन्दर ही होते हैं, वरना दो-दो लोगों का ब्यूटी पार्लर जाना कितना भारी पड़ता।
- शराबी मरने ही वाला था कि उसके सामने भगवान शिव प्रकट हुए।  
शिव जी प्रकट हुए।  
शिव जी—तुम्हारी कोई अंतिम इच्छा है? तो बताओ।  
शराबी—प्रभु अगले जन्म में दांत चाहे एक ही देना पर लीवर पूरे 32 देना।



# कहानी



# अविभाजित

—संतोष धीमान



“टू बी ऑर नॉट टू बी” ऐसी ही उहापोह व असमंजस की स्थिति में फंसी थी सविता। वह समझ नहीं पा रही थी कि वह क्या करे? “चन्दर बुआ को भी आज ही आना था” वह बुदबुदाई, वह स्वयं पर चकित हो रही थी कि जिस प्रिय बुआ के नयनाभिराम दर्शनों को लिये वह सदैव उत्सुक रहती थी आज उन के अचानक आ जाने पर प्रसन्न क्यों नहीं हो पा रही थी। वह निर्णय नहीं ले पा रही थी कि बुआ के साथ प्रतापबाग जाये या पापा को स्पष्ट बता दे कि कम से कम कल के दिन तो वह बुआ के साथ नहीं जा सकती। वह जानती थी मना करने पर पापा दस प्रश्न पूछेंगे “क्यों कल क्या है? ऐसा कौन सा काम है?” अरे सविता, मैं तो हैरान हूँ कि तू चन्दर बुआ के साथ जाने से मना कर रही है, अब वह पापा को कैसे बताये कि उसे वीरेन के पास जाना है।

वीरेन..., जिस से वह वादा कर आई है कि वह उस के जन्म दिवस पर उसके पास अवश्य पहुंचेगी। अगर उसे पहले पता होता कि चन्दर बुआ यूँ अचानक आ जायेगी तो वह वीरेन को मना कर देती कि वह उसके पास नहीं आ पायेगी। उसकी स्थिति तो उस बालक की भांति हो रही थी जिस से उसका सर्वप्रिय खिलौना छीन कर उसके हाथ में विदेशी खिलौना थमा दिया जाता है, जिससे वह न खेल सकता है न फेंक सकता है। वह जानती थी कि कल वीरेन उस का इन्तज़ार करेगा। उसे याद आया कि उस दिन वह केवल आधा घंटा ही तो लेट पहुंची थी। वीरेन को देखकर तो वह हैरान ही रह गई थी कैसे उस का सारा व्यक्तित्व धुआं धुआं सा हो उठा था, लगा था वह स्वयं कहीं से मीलों चल कर आया है वह पेड़ के नीचे बैठा उसे पगडंडी पर चलते हुए निहार रहा था। ज्यों ज्यों वह वीरेन के समीप पहुंच रही थी उसे लगा जैसे वीरेन की दृष्टि..... ओह। लगता था जैसे वह सारा का सारा दो आंखों में तब्दील हो कर केवल पगडण्डी की शून्यता को निहार रहा है। उसे देखते ही जैसे वह वर्तमान में लौट आया और व्यग्रता से उठ बैठा था। सविता तो उसे देख कर घबरा ही गई थी।

“क्या बात है वीरेन?” उस ने डरते हुए पूछा था।

“सवि, यू आर लेट, बाए हाफ एन ऑर”

“मेरी बस छूट गई थी” सविता ने धीरे से कहा था।

“तो क्या तुम रिक्शा नहीं ले सकती थी...? कोई ऑटो नहीं ले सकती थी....”

वीरेन लगभग चीख पड़ा।

“वीरेन....” सविता की आंखें छलछला उठी। उसने पहली बार वीरेन को ऊंचे स्वर में बोलते सुना था।

“सॉरी सवि...न जाने मुझे क्या हो जाता है। मैं यूं तिल-तिल जल कर इन्तज़ार नहीं कर सकता। यह तो मौत से भी भयंकर है। मुझे लगता है मेरी जान ही निकल जायेगी....ओह सवि....प्लीज अन्डरस्टैण्ड मी...आई कांट वेट.....सवि आई.कांट वेट.....”

वह कितनी ही देर तक उसकी गोद में सिर छुपाये चुपचाप लेटा रहा। दोनों में से कोई एक शब्द भी नहीं बोला था। केवल पेड़ों के पत्तों की सरसराहट थी जो संवाद बनकर एक दूसरे की आकुलता एक दूसरे तक पहुंचा रही थी। चलती हुई पवन का हल्का सा स्पर्श मात्र था जो उनको हल्का और हल्का बना कर अपने साथ ही उड़ा कर ले जा रही थी।

“चलें....” कुछ देर प्रतीक्षा करने के बाद सविता ने कहा। “एक बात कहूँ सवि, आज के बाद कभी इस तरह से मत आना...मैं इंतज़ार और वह भी तुम्हारा इंतज़ार, नहीं कर सकता...आई फील सो इम्पेशेंट ....आई कांट टॉलरेट.....प्लीज” वीरेन ने उसका हाथ अपनी ही हथेलियों में थाम कर कहा था और वीरेन को देखती रही।

अब कल यदि बुआ के साथ चली गई तो वीरेन सारा दिन उसका इंतज़ार कैसे करेगा? संध्या पंख लगा कर उतरने लगी थी। उसके पास इतना भी समय नहीं था कि वह वीरेन को सूचित ही कर पाती। कितनी अवश थी वह आवेश में उसकी आंखें बरसने लगी। उसे वीरेन की पीड़ा अपने भीतर अनुभव हो रही थी। “चन्दर बेटी क्या हुआ.....?” बुआ का स्नेहसिक्त स्वर उसके कानों में पड़ा।

“कुछ नहीं बुआ, सिर में थोड़ा दर्द है....” उसने बत्ती जलाते हुए कहा।

“क्या बात है बेटी, तेरी तो आंखें लाल हो रही हैं....लगता है सिर में ज्यादा ही दर्द है चल लेट जा मैं तेरे माथे पर थोड़ी बाम मल देती हूँ” बुआ एक सांस में ही कह गई और सविता भरी भरी आंखों से उसे निहारती रही।

“क्या बात है सवि....तबियत अधिक खराब है....?”

“नहीं बुआ, ऐसी कोई बात नहीं....” वह स्वयं पर बड़ी लज्जित महसूस कर रही थी।

“चल जल्दी से खाना खा ले, फिर सोना भी जल्दी है...सुबह मुंह अंधेरे ही उठ कर चलना है। जितनी शीघ्र हम यहां से निकलेंगे उतनी ही सुविधा अधिक रहेगी”, कह कर बुआ ने उसे अपने साथ उठाना चाहा।

“तुम सब खा लो बुआ, मुझे भूख नहीं.....” कहते हुए उसने फिर से बत्ती बुझा दी।

अन्धकार में भी वीरेन की व्याकुलता सविता को अपने अस्तित्व के चारों ओर घिरती हुई अनुभव हो रही थी। वह घबरा कर उठ बैठी। उसने फिर से बिजली जलाई और पर्दा उठा कर

खिड़की के बाहर देखा। चारों तरफ बत्तियां ही बत्तियां नज़र आ रही थी। लगता था गहन अन्धकार में भी सारे शहर में आकाश के तारे नीचे आ गये हों। वह सोच रही थी लोग ठीक ही कहते हैं कि शहरों में कभी रात नहीं होती बल्कि लोगों की असली जिन्दगी शुरू होती है जो दिन के उजाले में कोई दूसरा मुखौटा लगा कर ही घरों से बाहर निकलते हैं। बाहर से कार और मोटर, चौड़ी-चौड़ी सड़कों पर भागती हुई प्रतीत हो रही थी। काश ऐसी ही किसी गाड़ी में वह वीरेन को भाग कर बता देती कि वह कल नहीं आ पायेगी। कम से कम वह इन्तजार की पीड़ा से तो बच जायेगा।

क्या कर रहा होगा वीरेन? सवि ने सोचा। शायद अपने वॉयलिन के तार ठीक कर रहा होगा। उसे लगा वीरेन की छवि उसके आस पास ही यहीं कहीं घूम रही है। घबरा कर उसने बत्ती बुझा दी। मगर सविता को लगा, वह स्वयं को ही छल रही है। वीरेन तो अन्धेरे में उसे और भी स्पष्ट दिखाई दे रहा था।

“सवि ....उसकी यादों में जुगनू सा चमका, “जब तुम मेरे पास आओगी तो मैं तुम्हें वॉयलिन की वह धुन सुनाऊंगा जो केवल मेरी है...सिर्फ मेरी.....।” जानती हो जब तुम्हारी बहुत याद आती है तब मैं यही धुन वॉयलिन पर बजाता हूं और मुझे लगता है जैसे तुम मेरे बहुत करीब बैठी हो। उस धुन में से मैं तुम्हारी मधुर आवाज स्पष्ट सुनता हूं” मैं यहां हूं वीरेन....मैं यहां हूं.....”। कभी न बोलने वाला वीरेन मुखरित हो उठता।

आज ही तो उसने कहा था, “सवि कल हम दोनों मिल कर गुलाब का पौधा लगायेंगे। मैं आज ही नर्सरी से काले गुलाब की कलमें ले कर आऊंगा। आई थिंक इट विल बी एन इममेमोरेबल मोमेंट.....आई विल वेट फॉर यू सवि....प्लीज़ जल्दी आना...” कैसी चमक थी वीरेन की आंखों में उस पल। साफ-साफ, धुली धुली बिल्कुल बर्फ से पिघल कर बहने वाले स्वच्छ झरने की तरह या फिर शांत सागर पर फैली हुई चांदनी की तरह। सविता मूक उन आंखों में देखती ही रह गई थी।

अचानक सविता को लगा उसका सारा कमरा और आस पास का अन्धकार एक पगडण्डी में परिवर्तित हो गया है जहां केवल नीरवता है और वही दृष्टि.... शान्त समुन्दर में हलचल हुई और दो पुतलियां उभर कर कहने लगी “आई कांट वेट सवि.... आई कांट वेट....” सविता व्याकुल हो उठी। उसको समझ नहीं आ रहा था कि वह क्या करे? काश यह दिल्ली जैसी महानगरी सिकुड़ कर छोटी हो जाये, उसके ननिहाल के गांव की तरह और वह छत पर चढ़ कर वीरेन को बता दे कि वह कल अपनी बुआ के साथ उनकी बीमार बेटी को देखने जा रही है। अतः वह कल नहीं आ पायेगी। वह चाहती थी कि वह उड़ कर वीरेन के पास जाये और कम से कम यह तो कह ही आये कि वह गुलाब की कलमें जरूर-जरूर लगाये। वह जानती थी कि उसकी अनुपस्थिति में वीरेन गुलाब कभी नहीं लगायेगा। सविता का हृदय जार-जार रो रहा था, मगर उसे कुछ भी उपाय तो नहीं सूझ रहा था।

क्या कर रहा होगा वीरेन? उसने फिर सोचा, शायद सो गया होगा... नहीं, नहीं वह जाग रही है तो वीरेन कैसे सो सकता है। वह तो स्वयं ही कह रहा था कि वह आज रात सो नहीं पायेगा बल्कि भोर होने का इन्तजार करेगा। फिर क्या करता होगा वह शायद अपनी सर्वप्रिय धुन वॉयलिन पर बजा रहा हो..., शायद अपने बनाये सभी चित्रों को कम से रख रहा होगा.... या फिर बिखरे हुए रंगों व तूलिकाओं को उठाकर यथास्थान पर रख रहा होगा। “सवि, जितना मैं तुम्हें सुलझा हुआ, धीर-गम्भीर प्रकृति का लगता हूँ मैं उतना ही बिखरेपन में रहता हूँ....” सविता को वीरेन की बात याद आई। वह कैसे....? सविता ने वीरेन के हाथों से वह तिनका लेते हुए पूछा था जिसे वह बार-बार घुमा रहा था।

“तुम कभी घर आओगी तो देखोगी मेरा कमरा कितना बिखरा हुआ है....? कहीं किताबें, कहीं रंग, कहीं चित्र तो कहीं तूलिकाएं बस यूँ कहो कि कमरा क्या पूरा गोदाम सा लगता है।”

“वीरेन, मैं तुम्हारे कमरे में आकर पहले बिखरे सामान को ही कमवार और यथा-स्थान पर रखूंगी, तुम अच्छी अच्छी तरह जानते हो मुझे बिखराव कहीं भी अच्छा नहीं लगता, मगर वीरेन तुम लगते तो नहीं हो ऐसे। कैसे रहते हो बिखरे सामान के बीच?” “बस तुम्हारे ख्यालों में कब और कैसे समय बीत जाता है पता ही नहीं चलता...” उसने एक-एक शब्द सरगोशी के स्वर में ढाल कर कहा.... “मगर तुम्हारे आने से पहले मैं घर को पूरी तरह चमका कर रखूंगा.... कौन चाहेगा कि तुम पास बैठने की बजाय घर के सामान को ठीक करती रहो... और सविता गुलनार बनी वीरेन के निश्छल प्रेम के विषय में सोचती ही रह गई।”

कितना चाहता है वीरेन उसे वह आज फिर सोच रही थी। वह व्याकुल होकर फिर खड़ी हुई। सारी रात वीरेन के ख्यालों में ही बीत गई थी। आज उसे पहली बार इन पंक्तियों के अर्थ समझ आ रहे थे—

“तुम मेरे पास होते हो गोया, जब कोई दूसरा नहीं होता।”

थोड़ी देर बाद ही चन्दर बुआ की आवाज आई “सविता बेटी, उठकर तैयार हो जाओ” वह भारी मन से उठी और नहा-धोकर तैयार हो गई।

“अरे सवि, वह आसमानी सूट क्यों नहीं डाला जिसे कल प्रैस कर रही थी, कितना फबता है तुझ पर?” मां ने करीब आते हुए पूछा था, वह कैसे बतलाती मां को कि आसमानी सूट उसके वीरेन की पसंद है। अब जब वह उसके पास जा ही नहीं रही तो वस्त्र भी और डाल लिये।

“ओह तुम बहुत प्यारी हो सवि... और इन हल्के नीले वस्त्रों में जानती हो कैसी लगती हो...? सविता फिर से खो गई।

“कैसी...? सविता ने एक लजीली सी मुस्कान चेहरे पर बिखेरते हुए पूछा था। “लगता है कि तुम आसमान की तरह विशाल होकर पूरी कायनात पर छा रही हो और मैं तुम्हारी इस

स्नेहिल मुस्कुराहट में भीग जाता हूं सच सवि, जब तुम इतने प्यार से, इतने स्नेह से और इतने अपनेपन से मुझे देखती हो तो महसूस होता है कि यही क्षण, यही क्षण मेरे जीवन की धरोहर है शेष कुछ भी नहीं...। "इतना बड़ा तूफान भीतर लेकर भी वीरेन इतना सहज कैसे रह लेता है? सविता सोच रही थी और एक वह है कल से बुआ पचासों बार पूछ चुकी है, "सवि क्या बात है?" क्या वास्तव में ही उसका चेहरा बोलता है। "मैं तुम्हें देखकर ही बता सकता हूं सवि तुम क्या सोच रही हो...? सविता सोच रही थी। "सवि.... क्या सोचने लगी?" बुआ ने उसका कंधा थपथपाते हुए पूछा। "अरी बिटिया, इस गुलाबी सूट में भी तुम कम सुन्दर नहीं लग रही..." वह वीरेन के ख्याल से निकल कर यथार्थ के धरातल पर आ गई। "चलो बुआ चलते हैं?" उसने बुआ के हाथ से बैग लेते हुए कहा, "अच्छा सवि.... एक बात बताओ, कल से मैं देख रही हूं तुम कुछ उदास हो... तुम्हें किसी ने कुछ कहा है बेटी... कुछ तो बात है।" बुआ ने बस की सीट पर बैठी सविता से पूछा।

अब वह बुआ को क्या बताये कि आज कोई बड़ी बेसब्री से उसका इन्तजार कर रहा है और इन्तजार भी उसे करना पड़ेगा जो इन्तजार कर नहीं सकता। जिसके लिये इन्तजार मौत की घड़ियां गिनने से भी अधिक दुखदायी है। यह सविता भी खूब जानती थी.... एक-एक पल को इन्तजार की शक्ल में ढालकर समय बिताते समय पूरा जीवन ही इन्तजारमय हो जाता है और यह समय गुजारना कहीं अधिक कठिन है। वह अपनी कल्पना में बाल्कनी पर खड़े वीरेन को देख रही थी जिस की दृष्टि सड़क पर वहीं टिकी है जहां से सविता को उसे पास जाना था।

"सविता तुम कुछ बोल नहीं रही....।" अचानक बुआ की बात सुनकर सविता को झटका लगा।

"बुआ मैं सोच रही थी, इतने लोग सुबह से लेकर शाम तक कहां जाते हैं?"

"अरी पगली, जरा सोच तो हम कहां जा रहे हैं?" ऐसे ही सबके अपने काम हैं, अपनी समस्याएं हैं, अपना जीविकोपार्जन का अंदाज है, यह तो दुनियादारी है बेटी निभानी तो पड़ती ही है..." बुआ ने दार्शनिकों जैसे अंदाज में कहा।

मगर सविता अच्छी तरह जानती थी कि उस जैसी समस्या तो किसी की भी नहीं हो सकती, जिसे जाना कहीं और था और जा कहीं और रही है। "अरे सविता देखो तो उस लड़की को तौबा-तौबा बस में भी कितनी भड़कीली पोशाक पहन कर आई है। मैं तो सोच रही थी कितना अन्तर है अपनी सवि और दूसरी लड़कियों में। वैसे भी सवि कुछ तो है जो तुम इतनी भली लगती हो... सबसे अलग।"

सविता को लगा बुआ की आवाज वीरेन की आवाज में ढलकर कहीं दूर से आती प्रतीत हो रही है, "कुछ तो है सवि जो तुम सबसे अलग ही दिखाई देती हो... तुम्हारी शालीनता, तुम्हारी चाल, तुम्हारा उठना, तुम्हारा बैठना कुछ भी तो आजकल की लड़कियों से मेल नहीं खाता। तुम तो बस वीरेन के लिये ही बनी हो सवि.... जैसे मेरे विचार हैं वैसे तुम हो।"

“उठो सविता, घर आ गया है” बस बुआ की बेटी कामिनी के घर से कुछ ही दूरी पर खड़ी थी। दुआ सलाम के बाद सविता कुछ देर कामिनी के पास बैठी। उसके प्रश्नों का, कुशल क्षेम का ‘हूँ’ ‘हां’ में उत्तर दिया और चाय पीने के बाद बुआ को कामिनी के पास छोड़कर स्वयं दूसरे कमरे में चली गई। उसे मालूम था बुआ जब भी कामिनी के पास आती है तो मां बेटी की बातें शाम तक समाप्त नहीं होती।

सविता पर सोच के घेरे फिर घिरने लगे। वीरेन शायद चौराहे वाली सड़क पर खड़ा उसकी बाट जोह रहा होगा, नहीं....नहीं वह तो उस दिन की तरह धुंआ धुंआ होकर अपने कमरे में बैठा होगा, या फिर वायलिन की सर्वप्रिय धुन बजा रहा होगा। तेज....और तेज। या स्वयं ही बुढ़बुड़ा रहा होगा सवि तुम क्यों नहीं आई सवि....? या फिर विक्षुब्ध होकर तुलिकाएं इधर उधर फैंक रहा होगा।

सविता की सोच के दायरे बढ़ते ही जा रहे थे और वह उनमें उलझती चली जा रही थी। उसे उस उलझन से आजाद होने का कोई सिरा नहीं मिल रहा था। वह हैरान परेशान जानती थी कि वह आज रात भी सो नहीं पायेगी। वह सोच रही थी कि कल वह वीरेन को बतायेगी कि वह कितने पीड़ादायक क्षणों से गुजर कर आई है। वह कितनी आकुल और व्यथित रही है। अब तो वह वीरेन के अर्तनाद से भी परिचित हो चुकी थी। वह सोच रही थी कि वह तो रो भी लेती है मगर वीरेन की पीड़ा तो उस के हृदय में ही समाई रहती है। उसकी आंखों से तो कभी बाहर नहीं टपकती। वह वीरेन से पूछेगी कि पीड़ा के इस अहसास को, विकलता के इन क्षणों को भी वह जीवन की धरोहर मानता है या नहीं?

शायद प्रेम की यही परिभाषा है। पहले वीरेन जिन क्षणों की बात करता था उनका प्रत्यक्ष अनुभव उसे आज हुआ।

अगले दिन वे दोनों अपने निश्चित स्थान पर बैठे थे। अन्तर केवल इतना था आज सविता वीरेन से पहले पहुंचकर उसका इन्तजार कर रही थी। आज वह वीरेन की सारी पीड़ा को अपने अश्रुओं से धो देना चाहती थी। मगर क्या वह ऐसा कर पायेगी। वीरेन उसे दूर से आता हुआ दिखाई दिया उसी प्रकार से सहज कदमों से शान्त व गम्भीर जैसे कुछ हुआ ही नहीं। उसने सविता के पास बैठते हुए केवल यही पूछा—

“कल कहाँ थी सवि...तुम आई नहीं।”

और सविता डबडबाई आंखों से वीरेन को एकटक देखती रह गई। वह सोच रही थी कि वीरेन को क्या उत्तर दे। वह कल बुआ के साथ तो निश्चित रूप से नहीं थी वह तो एक-एक पल केवल वीरेन के ख्यालों में ही सराबोर रही। कल सारा दिन और सारी रात केवल वीरेन और वीरेन के ही साथ रही। फिर जो बुआ के साथ गई थी वह कौन थी...कौन थी वह।

# घुटन

—एकता



सभी ने खाना खा लिया क्या, कमला ने मोंटू से पूछा— मोंटू ने कहा “हां मां” सबने खा लिया “अब तुम भी खा लो” “मैं भी तुम्हारे साथ खाऊंगा”। कमला ने प्यार भरी आंखों से मुस्कुराते हुए उसकी ओर देखा और कहा एक तू ही तो है जो मेरा ख्याल रखता है” और फिर दोनों मुस्कुरा दिये।

कमला और मोंटू एक थाली में खाना खाने लगे। कमला मोंटू को खिलाते खिलाते न जाने किन ख्यालों में खो गई। घर में शादी का माहौल था। कमला की ननद मंजू के विवाह की तैयारियां चल रही थी। घर में मेहमान आए हुए थे। सादी सी साड़ी पहने, चेहरे पर मधुर मुस्कान लिए कमला सुबह से सभी की आवभगत में लगी हुई थी। वह सारा दिन बिना थके काम करती रहती।

“अरी ओ कमला, जरा बर्तन तो ले जा, यहां सभी ने खाना खा लिया है” सास ने कहा। कमला का ध्यान टूटता है और वह बर्तन उठाने कमरे में चली जाती है। कमला की तीनों ननदें वहां मौजूद थी। कमला के आने से पहले वहां किसी विशेष विषय पर चर्चा चल रही थी। लगता है शादी से संबंधित कोई चर्चा हो रही थी, पर कमला के आने पर वह विषय बदल दिया गया और बड़ी ननद कमला से कहने लगी “मंजू की शादी में कोई अच्छी सी साड़ी पहनना कोई ये न कहे की भाभी ने कैसी साड़ी पहनी है।”

कमला सादी रहने वाली लड़की थी। उसे दुनिया की चकाचौंध ने अभी छुआ न था। उसके ससुराल पक्ष ने उसकी इसी सादगी को उसका गवारपन मान लिया था। घर में उसके साथ बहु की तरह कम नौकरानी की तरह ज्यादा व्यवहार किया जाता था। कमला करती भी तो क्या मन मसोस कर रह जाती थी। न तो उसके मायके वाले इतने धनी थे कि कमला ससुराल में मायके का दंभ भरती। उसे अपमान का घूंट हर रोज पीना पड़ता था।

सास ने कहा “देख कमला, किसी भी मेहमान की खातिरदारी में कोई कमी न रह जाए” कमला ने “हां जी” कह कर सिर हिलाया। और फिर अपने काम में लग गई। कमला से न तो उसका पति और न ही घर का कोई सदस्य किसी भी विषय पर उसकी राय लेना जरूरी समझता था। कमला कभी—कभी सोचती उसका कसूर क्या है, क्यों सब उसके साथ इस तरह का व्यवहार करते हैं? वह अंदर ही अंदर उपेक्षा से घुटती रहती। शायद बाहरी दुनिया की चकाचौंध और लालच ने उसके ससुराल वालों को कमला की अच्छाइयों को देखने न दिया। कमला उस घर में अपने हिसाब से कोई काम नहीं कर सकती थी। मोंटू बेशक अभी बच्चा था पर वह अपनी मां की आंखों के सूनेपन को समझता था। उसने बालपन में ही कमला से प्रश्न किया “मां शादी करना जरूरी है क्या, अब क्या बुआ को भी आपकी तरह अपमानित हो कर, दूसरे के घर में रहना पड़ेगा”।



यह सुनते ही कमला ने मोंटू को गले से लगा लिया। उसकी आंखों से अविरल अश्रुधारा बह रही थी। उसके घावों को पहली बार किसी ने देखा और उनपर मरहम लगाने का प्रयास किया, अन्जाने में ही सही। कमला अपनी संवेदनाओं को न रोक सकी और बहुत देर तक रोती रही। उसके मन की पीड़ा को इस घर में शायद ही कोई समझ सकता था....

# बिजूका

—जसविंदर शर्मा



सिर नहीं है  
सिर की जगह  
औधीं रखी हंडिया  
देह, लाठी का टुकड़ा  
हाथों की जगह पतले डंडे  
वस्त्र नहीं है खाकी  
फिर भी क्या मजाल किसी की  
कोई पत्त भी चर ले  
तुम्हारे होते

—सावर दइया द्वारा रचित गुजराती कविता

अपने ही बच्चों ने खेमू का जीना मुहाल कर रखा था।  
खेमू और शिवू की दोस्ती गांव भर में मशहूर थी। उनकी पत्नियों में कभी-कभार मन मुटाव हो जाता मगर दोनों दोस्तों के मन पर मैल की परत न चढ़ती। वे उसी तरह एक दूसरे से मिलते थे और खेतों में जाकर मदद करते थे।

शिवू के बेटे पढ़-लिखकर शहर चले गए मगर खेमू के बच्चे पढ़ाई में नालायक निकले। एक दसवीं तक गया और फौज में चला गया मगर सत्रह साल बाद पेंशन लेकर लौट आया। तीन बच्चों के परिवार के लिए गुजारे लायक जमीन थी खेमू के पास। गाय भैसों के दम पर ही गुजारा चलता था।

शिवू के बेटे शहर गए तो फिर गांव नहीं लौटे। वहीं मकान डाल लिए उन्होंने। कोई ठिकाना तो होना चाहिए न। क्या करते सारी उम्र शहर में ही नौकरी करनी थी। आगे बाल-बच्चों की पढ़ाइयों की चिन्ता भी थी उन्हें। गांव में तो प्राइमरी तक ही स्कूल था। खुद वे कैसे पढ़ सके थे वही जानते थे। शिवू और खेमू सुबह शाम खेतों की देखभाल करते मिल जाते एक दूसरे को। इस बार मानसून समय पर न आने से दोनों परेशान थे। बातचीत मौसम से शुरू होकर फसलों, रिश्तेदारों, गांव की पंचायत तथा अपने बहू-बेटे तक जा पहुंचती। पहले वे बातें छिपा लेते थे एक दूसरे से मगर अब तो छोटी से छोटी बात बता देते।

शिवू आज कुछ ज्यादा ही परेशान था। खेमू से मिलते ही बोला, क्या बताऊं, ये औलाद अब मुझे चैन से जीने नहीं देती। बेटे हर वक्त क्लेश करते हैं, कि जीते जी मैं जमीन का बंटवारा कर दूं। मैंने कहा कि मेरा खर्च बांध दो तभी जमीन तुम्हारे नाम लिखूंगा। मुझे कोई पेंशन तो मिलती नहीं। जमीन ही मेरी बुढ़ापे का सहारा है। ससुरे कहते हैं कि शहर में प्लाट लेंगे। मैंने कहा कि अपने दम पर खरीदो। मैंने मिट्टी में गल-गलकर उन्हें पढ़ाया। दोनों को बी ए करवाया। बापू मरा था तो दो एकड़ जमीन थी मेरे पास। अपनी मेहनत से दो एकड़ और खरीदी। खेमू गहरी सांस लेकर बोला, काश मेरे बेटे भी पढ़ लिख



जाते। मैं उनकी जुदाई का गम सह लेता मगर वे तो यही गांव मे ही मेरी छाती पर सवार रहते हैं। अब भी चैन से रहने नहीं देते। हां, तूने तो मेहनत की है और जमीन तेरे पास है। मुझे देख मैंने सारी जमीन बेटे मे बांट दी। अपने पास कुछ नहीं रखा। अब दूसरों की जमीन पर काशत करके गुजारे लायक अनाज पैदा कर ही लेता हूं। मगर अब इस उम्र में अकेला रह पाना बहुत मुश्किल है।

समय एक जैसा नहीं रहता। शिवू ने उसे लाख मनाया था कि खेमू उसकी बैठक में रहने के लिए राजी हो जाए मगर खेमू में भी एक अजीब-सी अनख थी कि जिन को धूल में मिलाकर ही रहेगा। अपने खेतों की टपरी में खेमू को अच्छी नींद आती थी। उसने वहीं चार बांसों के सहारे जमीन से सात फुट ऊंची एक चौकी भी डाल ली थी जहां से वह खेती की देखभाल करता रहता और गर्मियों में वहा चढ़कर वह सो भी जाता था। अब तो उसके खेतों के आसपास बीसियों मुर्गी पालने वाले फार्म खुल गए थे। शुरू-शुरू में खेमू जब खेतों में रहने के लिए आया था तो दूर-दूर तक कोई रोशनी नहीं थी। कई दिन उसने बैचैनी और घबराहट में गुजारे थे। दिन में तो खेमू गांव मे लोगों से मिलता-जुलता, शिवू की दुकान पर बैठता या मन्दिर की तरफ निकल जाता मगर रात तो उसे अपनी खेत वाली टपरी पर ही गुजारनी होती थी। जब से आसपास रौनक बढ़ने लगी थी, खेतों में उसका मन लगने लगा था मगर सर्दियों मे बूढ़ी अकेली जान का उठ पाना व खाना बनाना बहुत तकलीफदेह था।



जवान था तो कईयों का सहारा था खेमू। हर तरफ उसका दबदबा था। गांव मे जिसके पास अच्छी जोर वाली जमीन हो और तीन जवान बेटे हों, वह रईस माना जाता है। खेमू इस मामले में बहुत किस्मतवाला था। जमीन अच्छी थी उसकी। दोनों बेटे गबरू-जवान थे। बेटों ने खेती अच्छी तरह सम्भाल ली थी। खेमू और शिवू में गहरी छनती थी। हर जगह दोनों साथ-साथ दिखते। शिवू ने गांव में ही सौदे-सुल्फ की दुकान खोल ली थी। पैसे की उसके पास भी कमी नहीं थी। खेमू अक्सर काम से फुरसत पा कर शिवू की दूकान पर बैठता, चिलम पीता, बतियाता।

खेमू ने जवानी मे बहुत मेहनत की थी। उसके दोनों बेटे खेती में ही खप गए। उसने उनकी धूमधाम से शादी की, छतों पर चौबारे डलवाकर बहुओं को बड़े चाव से रखा। खेत सोना उगलते थे। धीरे-धीरे खेती का पूरा जिम्मा अपने बेटों को सौंपकर खेमू गांव की पंचायत के चुनावों मे रुचि लेने लगा। पहली बार पंच बना, फिर सरपंच और फिर ब्लाक के चुनाव में वह जीतता चला गया। आसपास के गांवों में भी उसके नाम की चर्चा होने लगी। गांव में बिजली, टूटी का पानी, चौपाल, पक्की सड़कें आदि सुधार खेमू की मेहनत से ही हो पाए। खेमू के बिना किसी महफिल मे रंग न जमता, कोई शगुन-मुहूरत हो या गमी-शादी हो, खेमू हर जगह चौधरी-प्रधान होता था। जहां घर से बाहर खेमू कामयाबी की सीढ़ियां चढ़ता जा रहा था। वहां खुद अपने घर में उसकी बहुओं मे खींचतान बढ़ती जा रही थी। आसपास लोगों ने सलाह दी कि बेटों को अलग कर दो। खेमू ने जमीन बांटकर बेटों के नाम कर दी। अपनी पत्नी के साथ वह छोटे बेटे के साथ रहने लगा।

खेमू को तो गांव के लफड़ों-टंटो से ही फुरसत नहीं मिलती थी, कभी गलियां पक्की हो रहीं हैं तो कभी बी.डी.ओ. साहब आ रहे हैं तो कभी थाना-कचहरी में लोगों के मामलों मे देर रात तक खेमू उलझा रहता था। एक वह दौर था जब खेमू गली से गुजरता तो दस आदमी उस के साथ चल निकलते, हर तरफ जय राम जी की अवाजें सुनाई देती। खेमू बहुत निष्पक्ष तथा इन्साफपसन्द आदमी था इसीलिए सब जगह उस की इज्जत थी। किसी जरूरतमन्द का कभी भी संदेश आ जाता तो फटाफट कपड़े बदलकर खेमू बाहर निकल जाता था। गांव में तब छोटे-छोटे झगड़ों के लिए पंचायत बुलानी पड़ती थी। किसानों की खेतों, पशुओं व पानी की सैंकड़ो शिकायतें उठती थी। लोगों को पंचों के फैसले पर भरोसा था। पंचों को बरगलाना इतना आसान न था। लोग झूठे के खिलाफ सरेआम बोल उठते थे। खेमू को भी अपनी बात का पक्का माना जाता था।

उसकी इन्साफ-पसन्द नीतियों के कारण दोस्त तो कम बने, दुश्मन बहुत खड़े हो गए क्योंकि स्वार्थी आदमियों की कभी कमी नहीं रही। दुश्मनी रखनेवाले खेमू का तो कुछ बिगाड़ नहीं पाते थे मगर उसके भोले व मेहनती बेटों के कानो में जहर भरते रहते थे।

शिवू के बच्चों ने शहरों में ही पलैट वगैरा खरीद लिए। अब गांव में उनकी वापसी संभव नहीं दिखती थी। शिवू खेमू से मजाक में कहता, खेमू यार मैंने तो अपने पैरों पर खुद कुल्हाड़ी मारी है। बेकार मैं ही बच्चों को लिखाया-पढ़ाया। अब उन से बिछोड़े के लिए मैं ही जिम्मेवार हूँ। वे लोग तो यहां आ नहीं सकते, बच्चों की पढ़ाईया है। खेमू भाई, तू तो किस्मतवाला है। तेरी औलाद परिवार तो तेरी आंखों के सामने है, तेरे बुढ़ापे के बारे में सोचकर तो मेरा दिल कांप उठता है।

खेमू ने भी दिल की बात कही, तुझे क्या पता शिवू मेरे घर में क्या-क्या तूफान उठते हैं, मैं तो लोगों के झमेले में बेमतलब दौड़-भाग करता रहता हूँ। मेरा घर तो बर्बाद हो गया है। ये लीडरी ससुरा बहुत गलत नशा है। रात को अपनी बीवी की बातें सुनता हूँ तो दिल दहल उठता है मेरा। इस बार पंची या सरपंची के चुनाव में मैं खड़ा होने वाला नहीं। खेती का काम दुबारा शुरू करूंगा। तुम्हें तो मालूम ही है कि मैंने अपने लिए अलग से बचत तो रखी नहीं। जो कमाया, जमीन खरीद ली लैंटर डलवाएं चौबारे डलवाएं एक गलती हो गई। चौधराहट के नशे में मैंने सब कुछ बच्चों के नाम कर दिया। बेटे तो बहुओं के गुलाम निकले। कल बच्चों ने घर से धक्का दे दिया तो बटाई पर जीमन जोत कर बुढ़ापा कटेगा मेरा पंचायत ने कौन सा पेंशन दे देनी है।

खेमू दुबारा खेती की तरफ पलटा पचपन की उम्र थी उसकी इस अवस्था में शरीर कमजोर हो जाता है तथा स्वभाव चिड़चिड़ा। एक अजीब सी खीझ होती खेमू को वह चाहता था कि सब कुछ उसके हाथों में फिर से आ जाए। पन्द्रह-बीस सालों से खेमू ने खेतों में जाना बिल्कुल बन्द कर दिया था। गर्मी-सर्दी सहने का कोई अभ्यास नहीं रहा था उसे जरा-सा भी जोर जगाता तो कड़ाके की सर्दी में भी पसीना निकल आता उसका।

खेती में फिर से रुचि लेने का एक कारण और भी था खेमू की पत्नी को दमा हो गया था। दवा-दारु के लिए उसे बच्चों के आगे हाथ फैलाना पड़ रहा था तकरार इतनी बढ़ गयी थी कि छोटी बहू ने साफ कह दिया था कि सास-ससुर को साल में छह महीने बड़ी बहू भी रखे। खेमू को यूँ मोहताज की जिन्दगी जीना बहुत कष्टकारक लगा। वह खेमू जो दस लोगों का सहारा था, आज दौ-तीन सौ रुपयों के लिए बेटे से जिरह करता था, दांत पीसता था व गाली-गलौच करता था। चार-पांच सालों तक यही रस्साकशी रही अपने कब्जे में आई जमीन बच्चों ने खेमू को लौटाई नहीं। वह खेमू जो अथाह जमीन का मालिक था अब दिन रात टपरी में ही पड़ा रहता था दूसरों की खेती पर फसल उगाता था। सरकार ने थोड़ी बुढ़ापा पेंशन लगा दी थी दिनभर तो शिवू की दुकान पर बैठा रहता था वह सर्दियों के दिन बहुत मुसीबत लेकर आते थे उसके लिए।

शिवू ने कई बार खेमू के बेटों को बुलाकर समझाया-बुझाया उसके बेटे इस शर्त पर तैयार हो गए कि बापू चुपचाप खाना खा कर कमरे में पड़ा रहे मगर खेमू को मोहताज तथा उपेक्षित की जिन्दगी पसन्द नहीं थी। खेती करना तो मुश्किल था ही फसलों की रखवाली बहुत मुस्तैदी से करनी पड़ती थी उसे।

गीदड़, खरगोश, नीलगाय या जंगली सूअर तो फिर भी खेमू के विशाल बिजूका से डर जाते थे मगर गुर्जरों के खूंखार व भूखे झुंडों से फसल को बचाने के लिए खेमू को खुद ही पहरे पर रहना पड़ता था। पत्नी का स्वर्गवास हो गया था। ऐसे में खेमू खेतों में बनी टपरी में ही सोता था। सर्दी भी खूब होती थी उन खुले खेतों में मगर खेमू क्या करें? अब तो यही तीन बीघा जमीन बची थी उस के पास उसी की पैदावार का सहारा था उसे।

हर तरफ धुंध व कोहरा फिर इन गुर्जरों के पशुओं के झुंडों का कहर रातभर आहटें लेता रहता खेमू कि कहीं जानवर उस के खेत का नुकसान तो नहीं कर रहे। अभी हाल में उसने बांस के ऊपर पुराने कपड़े टांगकर तीन-चार बिजूका और लगवा दिए थे ताकि जानवरों के झुंड उसके खेतों में न घुसें गीदड़ व जंगली सूअर तो फिर भी उसके इन ऊंचे-लम्बे बिजूकाओं से डरते थे मगर गुर्जरों की गाय-भैंसों तो इस जिन्दा बिजूका खेमू से भी भय नहीं खाते थे। खेमू जोर-जोर की अवाजें देता रहता मगर जानवरों का झुंड का झुंड उसकी फसल उजाड़ता रहता। वह लाठी उठाकर कभी एक के पीछे दौड़ता तो कभी दूसरे के मगर उस बूढ़े खेमू की न तो अवाज में दम-खम बचा था और न बाजुओं में ताकत थी कि उन जंगली जानवरों को मार भगाए।

उस जिन्दा बूढ़े अशक्त बिजूका खेमू की इन नाकाम कोशिशों पर गुर्जरों के बच्चे हंसते, वह उन्हें भी गाली देता। खेमू को सचमुच पता नहीं था कि अब उसका अस्तित्व एक बेजान तथा बांस पर लटकते हुए फड़फड़ाते कपड़ों वाले बिजूका में परिवर्तित हो चुका है।

## कार्यालय समाचार

### खेल समाचार एवं अन्य गतिविधियाँ

- ❖ श्री गौरव देसवाल, लिपिक ने दिनांक 16 से 21 अप्रैल 2019 तक केरल तथा दिनांक 23 से 28 अप्रैल 2019 तक बेंगलोर, कर्नाटक में आल इंडिया सीनियर बैडमिंटन रैंकिंग टूर्नामेंट में भाग लिया।
- ❖ श्री अंकित कौशिक, वरिष्ठ लेखाकार ने दिनांक 15 से 17 अप्रैल 2019 तक अहमदाबाद में कोचिंग कैंप तथा दिनांक 18 से 28 अप्रैल 2019 तक अहमदाबाद में गुरुकुल प्रीमियर लीग-9 में भाग लिया।
- ❖ श्री अर्पित सिंह, लिपिक ने दिनांक 21,22,24,26,27,28 और 31 अप्रैल 2019 तक रणजी ट्रॉफी मैच (कटोच शील्ड ट्रॉफी) में भाग लिया।
- ❖ श्री आकाश वशिष्ठ, लिपिक ने दिनांक 01 से 15 अप्रैल 2019 तक धर्मशाला में रणजी ट्रॉफी कैम्प में भाग लिया।
- ❖ श्री अंकित कौशिक, वरिष्ठ लेखाकार ने दिनांक 06 से 08 तक धर्मशाला हिमाचल प्रदेश में एच.पी.सी.ए. रणजी ट्रॉफी टी-20 कैम्प में भाग लिया।
- ❖ श्री अंकित कौशिक, वरिष्ठ लेखाकार ने दिनांक 11 से 22 मई, 2019 तक धर्मशाला में स्पिन बॉलर एण्ड बैट्समैन (मिडिल आर्डर) प्री रणजी कैम्प में भाग लिया।
- ❖ श्री विजय आहुजा, वरिष्ठ लेखाकार, ने दिनांक 02 से 07 जून 2019 तक राजस्थान में 21 वें यूथ नेशनल वालीबाल चैम्पियनशिप में रेफरी के स्तर पर भाग लिया।
- ❖ श्री अंकित कौशिक, वरिष्ठ लेखाकार ने दिनांक 04 से 19 जून, 2019 तक हिमाचल प्रदेश में सीनियर स्टेट चैम्पियनशिप / रणजी ट्रॉफी सेलेक्शन में भाग लिया।
- ❖ श्री गौरव देसवाल, लिपिक तथा श्री कशिश लिपिक ने दिनांक 11 से 16 जून 2019 तक विजयवाड़ा, आन्ध्रप्रदेश में और दिनांक 18 से 23 जून 2019 तक हैदराबाद में ऑल इंडिया सीनियर बैडमिंटन रैंकिंग टूर्नामेंट 2019 में भाग लिया।
- ❖ इस कार्यालय के परीक्षा हाल में दिनांक 21.06.2019 को 5 वां अंतरराष्ट्रीय योग दिवस मनाया गया जिसमें कार्यालय के कर्मचारियों तथा अधिकारियों ने भाग लिया।
- ❖ श्री सुनील आहुजा, वरिष्ठ लेखाकार टेबल टेनिस खिलाड़ी ने दिनांक 23 से 30 जून 2019 तक सोनीपत में नार्थ ज़ोन नेशनल रैंकिंग टेबल टेनिस चैम्पियनशिप में भाग लिया।
- ❖ श्री अर्पित सिंह, लिपिक ने दिनांक 06, 07, 09, 12, 13, 15 को सुपर लीग स्टेट मैच ऑफ द कटोच शील्ड ट्रॉफी (सेलेक्शन मैच फॉर रणजी ट्रॉफी) में भाग लिया।

- ❖ श्री सुनील आहुजा, श्री राहुल मल्होत्रा तथा श्री रोहित राज खोलिया, वरिष्ठ लेखाकारों, ने दिनांक 14.08.2019 से 21.08.2019 तक त्रिवेंदरम, केरला में यू.टी.टी नेशनल रैंकिंग टेबल टेनिस चैम्पियनशिप 2019 में भाग लिया ।
- ❖ श्री सुनील अहुजा, श्री राहुल मल्होत्रा तथा श्री रोहित राज खोलिया, वरिष्ठ लेखाकारों, ने दिनांक 29.09.2019 से 01.10.2019 तक इलाहाबाद में उत्तर क्षेत्रीय टेबल टेनिस प्रतियोगिता में भाग लिया ।
- ❖ श्री सुनील आहुजा, वरिष्ठ लेखाकार, ने दिनांक 09.10.2019 से 12.10.2019 तक चण्डीगढ़ में 32वां चण्डीगढ़ स्टेट टेबल टेनिस चैम्पियनशिप-2019 फार जूनियर्स, यूथ एण्ड सीनियर में एस. गुरमीत सिंह ग्रेवाल मेमोरियल ट्रॉफी में भाग लिया और मैन्स सिंगल्स में प्रथम स्थान प्राप्त किया ।
- ❖ श्री गौरव देसवाल तथा श्री कशिश, लिपिक, बैडमिंटन खिलाड़ियों ने दिनांक 06.08.2019 से 11.08.2019 तक हैदराबाद में हैदराबाद ओपन 2019 बैडमिंटन टूर्नामेंट में भाग लिया ।
- ❖ श्री गौरव देसवाल तथा श्री कशिश, लिपिक, बैडमिंटन खिलाड़ियों ने दिनांक 05.09.2019 से 07.09.2019 तक इलाहाबाद में उत्तर क्षेत्रीय बैडमिंटन प्रतियोगिता में भाग लिया और मैन्स टीम में विजेता रहे ।
- ❖ श्री गौरव देसवाल तथा श्री कशिश, लिपिक, बैडमिंटन खिलाड़ियों ने दिनांक 23.09.2019 से 25.09.2019 तक भोपाल (मध्य प्रदेश) में आई.ए एण्ड ए.डी. इंटर जोनल बैडमिंटन टूर्नामेंट में भाग लिया ।
- ❖ श्री राकेश कुमार, वरिष्ठ लेखाकार, वेटरन कैरम खिलाड़ी ने दिनांक 27.09.2019 से 29.09.2019 तक नई दिल्ली में भारतीय लेखा परीक्षा एवं लेखा विभाग उत्तर क्षेत्रीय प्रतियोगिता 2019-20 में भाग लिया ।
- ❖ श्री रणदीप सिंह, वरिष्ठ लेखाकार, फुटबाल खिलाड़ी ने दिनांक 22.09.2019 से 27.09.2019 हल्द्वानी (उत्तराखण्ड) में चण्डीगढ़ सीनियर स्टेट फुटबाल टीम की तरफ से संतोष ट्रॉफी 2019 में भाग लिया ।
- ❖ श्री जगरूप सिंह, वरिष्ठ लेखाकार, हॉकी खिलाड़ी ने दिनांक 25.06.2019 से 22.07.2019 तथा श्री हरजीत सिंह, वरिष्ठ लेखाकार, हॉकी खिलाड़ी ने दिनांक 30.06.2019 से 22.07.2019 तक बंगलौर में सलेक्शन ट्रायल कम कोचिंग कैंप तथा तीसरा बेंगलूरु सुपर लीग 2019 में भाग लिया ।
- ❖ श्री दिनेश मान, वरिष्ठ लेखाकार, हॉकी खिलाड़ी ने कोच तथा श्री गुरमेर, डी.ई.ओ. ने मैनेजर के स्तर पर दिनांक 05.09.2019 से 09.09.2019 तक करनाल में जूनियर स्टेट चैम्पियनशिप में भाग लिया ।
- ❖ श्री दवेश राणा, वरिष्ठ लेखाकार, हॉकी खिलाड़ी ने दिनांक 25.09.2019 से 26.09.2019 तक रायपुर (छत्तीसगढ़) में भारतीय लेखा एवं लेखा परीक्षा विभाग पश्चिम क्षेत्रीय हॉकी

प्रतियोगिता 2019–20 में भाग लिया ।

- ❖ श्री जगरूप सिंह, तथा ध्यान सिंह, वरिष्ठ लेखाकार, हॉकी खिलाड़ियों ने दिनांक 22.09.2019 से 12.10.2019 सी.ए.जी टीम के कोचिंग कैंप तथा 36वें इंटर ऑयल सर्वो सुरजीत हॉकी टूर्नामेंट –2019 में भाग लिया ।
- ❖ श्री अंकित कौशिक, वरिष्ठ लेखाकार, श्री अर्पित सिंह तथा श्री जसकरणदीप सिंह, लिपिक, क्रिकेट खिलाड़ियों ने दिनांक 22.09.2019 से 16.10.2019 तक बी.सी.सी.आई. विजय हजारे ट्रॉफी 2019 में तथा श्री आकाश वशिष्ठ, लिपिक, क्रिकेट खिलाड़ी ने दिनांक 17.09.2019 से 02.10.2019 तक एच.पी.सी.ए. टीम इन रणजी सलेक्शन मैचों में भाग लिया ।
- ❖ श्री अंकित कौशिक, वरिष्ठ लेखाकार, तथा श्री जसकरणदीप सिंह, लिपिक, क्रिकेट खिलाड़ियों ने दिनांक 19.08.2019 से 07.09.2019 तक सी.ए.जी टीम के सलेक्शन ट्रायल कम कोचिंग कैंप तथा 25वां ऑल इंडिया जे.पी.अत्री क्रिकेट प्रतियोगिता 2019 में भाग लिया ।
- ❖ बी.सी.सी.आई. विजय हजारे ट्रॉफी 2019 में तथा श्री आकाश वशिष्ठ, लिपिक, क्रिकेट खिलाड़ी ने दिनांक 17.09.2019 से 02.10.2019 तक एच.पी.सी.ए. टीम इन रणजी सलेक्शन मैचों में भाग लिया ।
- ❖ इस कार्यालय के प्रांगण में स्वतन्त्रता दिवस 15 अगस्त 2019 को मनाया गया जिसमें श्री समर कांत ठाकुर प्रधान निदेशक लेखापरीक्षा (केंद्रीय) चण्डीगढ़ ने राष्ट्रीय ध्वज फहराया तत्पश्चात् इस कार्यालय के कलाकारों ने देश भक्ति का कार्यक्रम भी प्रस्तुत किया ।
- ❖ इस कार्यालय के परीक्षा हॉल में दिनांक 21 जून 2019 5वां अंतर्राष्ट्रीय योग दिवस मनाया गया जिसमें कार्यालय के अधिकारी तथा कर्मचारियों ने भाग लिया ।
- ❖ श्री गौरव देसवाल तथा श्री कशिश, लिपिक, बैडमिंटन खिलाड़ियों ने दिनांक 14.02.2019 से 20.02.2019 तक महाराष्ट्र में एच.ए.एस.— ऑल इंडिया सिविल सर्विस बैडमिंटन टूर्नामेंट 2018–19 में भाग लिया और मैन्स टीम में प्रथम स्थान प्राप्त किया ।
- ❖ श्री विजय आहुजा, बॉलीबाल खिलाड़ी के दिनांक 10.12.2019 से 20.12.2019 तक कुरुक्षेत्र में टेक्निकल ऑफिशल के स्तर पर नॉर्थ जोन/ऑल इण्डिया इंटर यूनिवर्सिटी वालिबाल (वूमेन) चैम्पियनशिप में भाग लिया ।
- ❖ श्री जगरूप सिंह, वरिष्ठ लेखाकार, हॉकी खिलाड़ी ने दिनांक दिसम्बर 2019 से 18 जनवरी तक नई दिल्ली से सी.ए.जी टीम के सिलेक्शन ट्रायल कम कोचिंग कैंप में तथा दिनांक 20 जनवरी से 26 जनवरी 2020 तक झांसी में टेन्थ सीनियर नेशनल चैम्पियनशिप में भाग लिया ।
- ❖ श्री संदीप सिंह, वरिष्ठ लेखाकार हॉकी खिलाड़ी ने दिनांक 23 जनवरी से 02 फरवरी 2020 तक लखनऊ में सी.ए.जी. टीम के सिलेक्शन ट्रायल कम कोचिंग कैंप तथा हॉकी टूर्नामेंट झांसी में 39वें ऑल इंडिया के.डी. बाबु मेमोरियल हॉकी टूर्नामेंट में भाग लिया ।
- ❖ श्री ध्यान सिंह, वरिष्ठ लेखाकार हॉकी खिलाड़ी ने दिनांक 17 से 22 अक्टूबर 2019 तक लखनऊ में सी.ए.जी. टीम के सिलेक्शन ट्रायल कम कोचिंग कैंप तथा टेन्थ नेशनल

चैम्पियनशिप 2020 में भाग लिया।

- ❖ श्री जगरूप सिंह तथा ध्यान सिंह, हॉकी खिलाड़ियों ने दिनांक 12 सितम्बर से 12 अक्टूबर 2019 तक चंडीगढ़ तथा जलंधर में सी.ए.जी. टीम के कोचिंग कैंप टेन्थ एण्ड थर्टी सिक्स्थ इंडियन ऑयल सर्वो सुरजीत हॉकी टूर्नामेंट 2019 में भाग लिया।
- ❖ श्री गौरव देसवाल, बैडमिंटन खिलाड़ी ने दिनांक 05.11.2019 से 10.11.2019 तक जोधपुर में ऑल इण्डिया सीनियर रैंकिंग बैडमिंटन टूर्नामेंट में भाग लिया और मैन्स डबल इवेंट में सैमी फाइनलिस्ट स्थान प्राप्त किया।
- ❖ श्री गौरव देसवाल तथा श्री कशिश दिनांक 12.11.2019 से 17.11.2019 तक पूना में ऑल इण्डिया सीनियर रैंकिंग बैडमिंटन टूर्नामेंट 2019 में भाग लिया।
- ❖ श्री गौरव देसवाल तथा श्री कशिश ने दिनांक 20.11.2019 से 14.11.2019 तक मुम्बई में इंफोसेस फाउंडेशन इण्डिया इंटरनेशनल चैम्पियनशिप 2019 में भाग लिया।
- ❖ श्री गौरव देसवाल तथा श्री कशिश दिनांक 26.11.2019 से 01.12.2019 तक लखनऊ में ऑल इण्डिया इको ग्रीन सैय्यद मोदी इंटरनेशनल बैडमिंटन चैम्पियनशिप 2019 में भाग लिया।
- ❖ श्री गौरव देसवाल, बैडमिंटन खिलाड़ी ने दिनांक 27.12.2019 से 12 जनवरी तक 2020 तक गुजरात में ऑल इण्डिया सिविल सर्विस बैडमिंटन टूर्नामेंट 2019-20 में भाग लिया और मैन्स टीम चैम्पियनशिप में प्रथम स्थान पर रहे।
- ❖ श्री गौरव देसवाल, बैडमिंटन खिलाड़ी ने दिनांक 07.01.2020 से 12.01.2020 जनवरी तक बेंगलुरु, कर्नाटका में तथा दिनांक 14.01.2020 से 19.01.2020 में तक गोवा में ऑल इण्डिया सीनियर रैंकिंग बैडमिंटन टूर्नामेंट में भाग लिया।
- ❖ श्री गौरव देसवाल तथा श्री कशिश, बैडमिंटन खिलाड़ी ने दिनांक 18.02.2020 से 23.02.2020 तक बरेली में ऑल इण्डिया सीनियर रैंकिंग बैडमिंटन टूर्नामेंट में भाग लिया।
- ❖ श्री हरजीत सिंह तथा श्री संदीप सिंह, हॉकी खिलाड़ियों ने झांसी प्रदेश में दिनांक 23.01.2020 से 02.02.2020 तक 10वें हॉकी इण्डिया सीनियर मैन्स नेशनल हॉकी चैम्पियनशिप 2020 (ए डिविजन) में भाग लिया।
- ❖ श्री जगरूप सिंह, हॉकी खिलाड़ियों ने सी.ए.जी. की टीम में दिनांक 23.12.2019 से 26.01.2020 तक दिल्ली में सिलेक्शन ट्रायल कम कोचिंग कैंप तथा झांसी, उत्तर प्रदेश में आयोजित 10वें हॉकी इण्डिया सीनियर मैन्स नेशनल हॉकी चैम्पियनशिप 2020 (ए डिविजन) में भाग लिया।
- ❖ श्री जगरूप सिंह, हॉकी खिलाड़ियों ने सी.ए.जी. की टीम में दिनांक 28.12.2019 से 26.01.2020 तक दिल्ली में सिलेक्शन ट्रायल कम कोचिंग कैंप तथा झांसी, उत्तर प्रदेश में आयोजित 10वें हॉकी इण्डिया सीनियर मैन्स नेशनल हॉकी चैम्पियनशिप 2020 (ए डिविजन) में भाग लिया।

- ❖ इस कार्यालय की संयुक्त हॉकी टीम ने दिनांक 9.12.2019 से 11.12.2019 चण्डीगढ़ में भारतीय लेखा परीक्षा एवं लेखा विभाग उत्तर क्षेत्रीय हॉकी प्रतियोगिता में भाग लिया।
- ❖ श्री हरप्रीत सिंह, पर्यवेक्षक ने दिनांक 14.12.2019 से 24.12.2019 तक विशाखपट्टनम में 57वें नेशनल रोलर स्केटिंग चैम्पियनशिप (रोलर हॉकी / इनलाइन हॉकी) में चीफ कोच के स्तर पर भाग लिया।
- ❖ श्री सुनील आहुजा, टेबल टेनिस खिलाड़ी, ने दिनांक 23 से 20 जून 2019 तक सोनीपत में नॉर्थ जोन नेशनल बैंकिंग टेबल टेनिस चैम्पियनशिप में भाग लिया।
- ❖ श्री सुनील आहुजा, श्री राहुल मल्होत्रा तथा रोहित राज खोलिया, टेबल टेनिस खिलाड़ियों, ने दिनांक 14.08.2019 से 21.08.2019 तक त्रिवेंद्रम, केरला में साउथ जोन नेशनल बैंकिंग टेबल टेनिस चैम्पियनशिप में भाग लिया।
- ❖ श्री सुनील आहुजा, श्री राहुल मल्होत्रा तथा रोहित राज खोलिया, टेबल टेनिस खिलाड़ियों, ने दिनांक 29.09.2019 से 01.10.2019 तक इलाहाबाद में आई.ए. एण्ड ए.डी. नॉर्थ जोन टूर्नामेंट 2019-20 में भाग लिया। श्री सुनील ने मैन्स सिंगल में तीसरा स्थान प्राप्त किया।
- ❖ श्री राहुल मल्होत्रा टेबल टेनिस खिलाड़ी, ने दिनांक 26.11.2019 से 30.11.2019 तक फिरोजपुर में 160वें पंजाब स्टेट ओपन डिस्ट्रिक्ट टेबल टेनिस चैम्पियनशिप में भाग लिया।
- ❖ श्री सुनील आहुजा, टेबल टेनिस खिलाड़ी, ने दिनांक 08.01.2020 से 10.01.2020 तक अहमदाबाद में आई.ए. एण्ड ए.डी. इन्टर जोन टेबल टेनिस टूर्नामेंट 2019-20 में भाग लिया।
- ❖ श्री सुनील आहुजा, टेबल टेनिस खिलाड़ी, ने दिनांक 27.01.2020 से 02.02.2020 तक हैदराबाद में 81वें सीनियर नेशनल एण्ड इन्टर स्टेट टेबल टेनिस टूर्नामेंट 2019-20 में भाग लिया।
- ❖ इस कार्यालय के प्रांगण में स्वतंत्रता दिवस 26 जनवरी 2020 को मनाया गया। जिसमें श्री अजायब सिंह डायरेक्टर जनरल ऑफ ऑडिट (सेन्ट्रल) चण्डीगढ़ ने राष्ट्रीय ध्वज फहराया तत्पश्चात इस कार्यालय के कलाकारों ने देश भक्ति का कार्यक्रम भी प्रस्तुत किया।
- ❖ इस कार्यालय के द्वारा दिनांक 9.12.2019 से 11.12.2019 तक उत्तर क्षेत्रीय हॉकी प्रतियोगिता 2019-20 का आयोजन करवाया गया तथा ए.जी.(यू.पी.), इलाहाबाद की टीम विजेता रही।
- ❖ श्री गौरव देसवाल, बैडमिंटन खिलाड़ी ने दिनांक 27.12.2019 से 02.01.2020 तक गुजरात में ऑल इण्डिया सिविल सर्विसेज़ बैडमिंट टूर्नामेंट 2019-20 में भाग लिया और मैन्स टीम चैम्पियनशिप में प्रथम स्थान प्राप्त किया।
- ❖ श्री सुनील आहुजा तथा श्री राहुल मल्होत्रा टेबल टेनिस खिलाड़ियों ने दिनांक 07.02.2020 से 11.02.2020 तक महाराष्ट्र में आई.ए. एण्ड ए.डी. नॉर्थ जोन टूर्नामेंट 2019-20 में भाग लिया। श्री सुनील ने मैन्स सिंगल में तीसरा स्थान प्राप्त किया।

## नियुक्तियाँ

01-04-2019 से 31-03-2020

| क्रम संख्या | नाम (सर्व श्री / श्रीमति) | पदनाम     | नियुक्ति की तिथि |
|-------------|---------------------------|-----------|------------------|
| 1.          | दिशा                      | लिपिक     | 24-06-2019       |
| 2.          | प्रवीन कुमार              | एम.टी.एस. | 29-07-2019       |
| 3.          | राहुल पांडे               | लिपिक     | 05-08-2019       |

## पदोन्नतियाँ

लेखा अधिकारी से वरिष्ठ लेखा अधिकारी के पद पर पदोन्नति

| क्रम संख्या | नाम (श्री / श्रीमति) | दिनांक     |
|-------------|----------------------|------------|
| 1.          | सूरज भान             | 20-11-2019 |
| 2.          | करण सिंह रावत        | 20-11-2019 |
| 3.          | पृथ्वी पाल सिंह राणा | 20-11-2019 |
| 4.          | अशोक कुमार राणा      | 20-11-2019 |
| 5.          | शम्पा दास            | 20-11-2019 |
| 6.          | जतिंदर पाल मलिक      | 20-11-2019 |
| 7.          | जसविंदर गिल          | 20-11-2019 |
| 8.          | नरेश कुमार कौडा      | 20-11-2019 |
| 9.          | त्रिलोचन सिंह        | 20-11-2019 |
| 10.         | मधु बाला सैनी        | 20-11-2019 |
| 11.         | वेद प्रकाश           | 20-11-2019 |
| 12.         | जय गोपाल वर्मा       | 20-11-2019 |
| 13.         | राकेश कुमार शर्मा    | 20-11-2019 |
| 14.         | अनीता रानी           | 20-11-2019 |
| 15.         | निशि शर्मा           | 20-11-2019 |
| 16.         | सुनील कुमार कक्कड़   | 20-11-2019 |
| 17.         | सरजीत सिंह - II      | 20-11-2019 |
| 18.         | सीमा गुप्ता          | 20-11-2019 |
| 19.         | गुरप्रताप सिंह       | 20-11-2019 |
| 20.         | सुनील कुमार- I       | 20-11-2019 |

सहायक लेखा अधिकारी से लेखा अधिकारी के पद पर पदोन्नति

| क्रम संख्या | नाम (श्री / श्रीमति) | दिनांक     |
|-------------|----------------------|------------|
| 1.          | सुनील कुमार-1        | 11-04-2019 |

मण्डलीय लेखाकार/वरिष्ठ लेखाकार से सहायक लेखा अधिकारी के पद पर पदोन्नति

| क्रम संख्या | नाम (श्री/श्रीमति) | दिनांक     |
|-------------|--------------------|------------|
| 1.          | नेहा पृथी          | 01-01-2020 |
| 2.          | शिना               | 01-01-2020 |
| 3.          | राकेश कुमार        | 01-01-2020 |
| 4.          | सिमरजीत कौर        | 01-01-2020 |
| 5.          | वरिंदर सिंह सैनी   | 05-02-2020 |

लेखाकार से वरिष्ठ लेखाकार के पद पर पदोन्नति

| क्रम संख्या | नाम (श्री/श्रीमति) | दिनांक     |
|-------------|--------------------|------------|
| 1.          | बृजपाल उपाध्याय    | 01-01-2020 |
| 2.          | वरिंदर पाल         | 01-01-2020 |
| 3.          | लक्की वर्मा        | 01-01-2020 |
| 4.          | दिनेश शर्मा        | 01-01-2020 |
| 5.          | मनीष कुमार         | 01-01-2020 |
| 6.          | बजिंदर सिंह भट्टी  | 01-01-2020 |
| 7.          | अभिजीत             | 01-01-2020 |
| 8.          | चमन लाल            | 01-01-2020 |
| 9.          | रचित अरोड़ा        | 01-01-2020 |
| 10.         | सुनील कुमार बरिक   | 01-01-2020 |
| 11.         | स्पेन गर्ग         | 01-01-2020 |
| 12.         | देविंदर कुमार      | 01-01-2020 |
| 13.         | ख्याति सूद         | 01-01-2020 |
| 14.         | अमनदीप             | 01-01-2020 |
| 15.         | अर्जुन सिंह        | 01-01-2020 |
| 16.         | मंदीप सिंह         | 01-01-2020 |
| 17.         | विनीत सिंह रावत    | 01-01-2020 |
| 18.         | दुर्गेश वधवा       | 01-01-2020 |
| 19.         | विपन कुमार         | 01-01-2020 |
| 20.         | हरदीप नैन          | 01-01-2020 |
| 21.         | मोहम्मद जावेद      | 01-01-2020 |

| क्रम संख्या | नाम (श्री/श्रीमति)   | दिनांक     |
|-------------|----------------------|------------|
| 22.         | राजेश्वर कश्यप       | 01-01-2020 |
| 23          | रेवंता राम           | 01-01-2020 |
| 24.         | अजय शिवहरे           | 01-01-2020 |
| 25.         | हरप्रीत कौर          | 01-01-2020 |
| 26.         | सुमित कुमार घोड़ेला  | 01-01-2020 |
| 27.         | नवल किशोर साह        | 01-01-2020 |
| 28.         | आनंद कुमार           | 01-01-2020 |
| 29.         | सुशांत कुमार         | 01-01-2020 |
| 30.         | राजेंद्र कुमार शर्मा | 01-01-2020 |
| 31.         | रंधीर सिंह           | 01-01-2020 |
| 32.         | तरुणा कनोजिया        | 01-01-2020 |
| 33.         | सीमा                 | 01-01-2020 |
| 34.         | भानु प्रताप सिंह     | 01-01-2020 |
| 35.         | विकास भघेल           | 01-01-2020 |
| 36.         | विनोद कुमार-2        | 01-01-2020 |
| 37.         | संदीप कुमार          | 01-01-2020 |
| 38.         | अमन वर्मा            | 01-01-2020 |
| 39.         | गगनदीप सिंगला        | 01-01-2020 |
| 40.         | प्रखर दीप राणा       | 01-01-2020 |
| 41.         | पंकज चतुर्वेदी       | 01-01-2020 |
| 42.         | अंकित मलिक           | 01-01-2020 |
| 43.         | सुनीत कुमार          | 01-01-2020 |
| 44.         | आकाश सिंह            | 01-01-2020 |
| 45.         | अनूप डांगरा          | 01-01-2020 |
| 46.         | विकास यादव           | 01-01-2020 |
| 47.         | नितीश कटारिया        | 01-01-2020 |
| 48.         | दीपक अतरी            | 01-01-2020 |
| 49.         | पूजा                 | 01-01-2020 |

लिपिक से लेखाकार के पद पर पदोन्नति

| क्रम संख्या | नाम (श्री/श्रीमति) | दिनांक     |
|-------------|--------------------|------------|
| 1.          | ऋषभ कुमार कटारिया  | 01-01-2020 |
| 2.          | विशाल अरोड़ा       | 01-01-2020 |

एम.टी.एस से लिपिक के पद पर पदोन्नति

| क्रम संख्या | नाम (श्री/श्रीमति) | दिनांक     |
|-------------|--------------------|------------|
| 1.          | श्री नरेश कुमार    | 01-01-2020 |
| 2.          | श्री सलिनंदर कुमार | 01-01-2020 |
| 3.          | श्री राज कुमार- II | 01-01-2020 |
| 4.          | श्री दनेश लाल      | 01-01-2020 |
| 5.          | श्री शिव कुमार     | 01-01-2020 |
| 6.          | श्री जमील खान      | 01-01-2020 |

सेवानिवृत्तियाँ

अधिकारियों/कर्मचारियों की सेवानिवृत्ति एवं देहावसान सम्बंधित सूचना (01-04-2019 से 31-03-2020)

| क्रम संख्या | नाम (श्री/श्रीमति) पद                | सेवानिवृत्ति की तिथि |
|-------------|--------------------------------------|----------------------|
| 1.          | प्रोमिला कुमारी, वरिष्ठ लेखाकार      | 30-04-2019           |
| 2.          | मनसा राम, एमटीएस                     | 30-04-2019           |
| 3.          | लाल चंद, वरिष्ठ लेखाकार              | 31-05-2019           |
| 4.          | सहिंदर सिंह, एमटीएस                  | 31-05-2019           |
| 5.          | अशोक कुमार, एमटीएस                   | 31-05-2019           |
| 6.          | कमल देव बरपग्गा, वरिष्ठ लेखा अधिकारी | 31-07-2019           |
| 7.          | हरप्रीत कौर, वरिष्ठ लेखाकार          | 31-07-2019           |
| 8.          | मेवा सिंह, एमटीएस                    | 31-07-2019           |
| 9.          | तलविंदर सिंह, सहायक लेखा अधिकारी     | 30-09-2019           |
| 10.         | नीलम सैनी, वरिष्ठ लेखाकार            | 30-09-2019           |

| क्रम संख्या | नाम (श्री/श्रीमति) पद               | सेवानिवृत्ति की तिथि |
|-------------|-------------------------------------|----------------------|
| 11.         | अमरजीत सिंह, लिपिक                  | 30-09-2019           |
| 12.         | अनिल कुमार, वरिष्ठ लेखाकार          | 31-10-2019           |
| 13.         | भगत राज, वरिष्ठ लेखाकार             | 31-10-2019           |
| 14.         | अनीता रानी, वरिष्ठ लेखा अधिकारी     | 30-11-2019           |
| 15.         | अर्जुन सिंह, वरिष्ठ लेखाकार         | 30-11-2019           |
| 16.         | चंचल रानी, वरिष्ठ लेखाकार           | 30-11-2019           |
| 17.         | मधु बाला, वरिष्ठ लेखाकार            | 30-11-2019           |
| 18.         | रुकमणी "अ" वरिष्ठ लेखाकार           | 30-11-2019           |
| 19.         | राम सिंह सैनी, वरिष्ठ लेखा अधिकारी  | 31-12-2019           |
| 20.         | निशी शर्मा, वरिष्ठ लेखा अधिकारी     | 31-01-2020           |
| 21.         | अश्वनी अंग्रिश, वरिष्ठ लेखाकार      | 30-01-2020           |
| 22.         | भाग सिंह, वरिष्ठ लेखाकार            | 31-01-2020           |
| 23.         | गुरबचन सिंह, वरिष्ठ लेखाकार         | 28-02-2020           |
| 24.         | जोगिन्द्र सिंह, वरिष्ठ लेखाकार      | 28-02-2020           |
| 25.         | कुसम सपला, वरिष्ठ लेखाकार           | 28-02-2020           |
| 26.         | विजय कुमारी शर्मा, वरिष्ठ लेखाकार   | 28-02-2020           |
| 27.         | गुरमीत सिंह ग्रेवाल, वरिष्ठ लेखाकार | 31-03-2020           |
| 28.         | सरजीत सिंह, वरिष्ठ लेखाकार          | 31-03-2020           |
| 29.         | अरुण कुमार, वरिष्ठ लेखाकार          | 31-03-2020           |
| 30.         | चरणदास, वरिष्ठ लेखाकार              | 31-03-2020           |
| 31.         | जोगिन्द्र सिंह, वरिष्ठ लेखाकार      | 31-03-2020           |

सभी सेवा निवृत्त अग्रज साथियों की दीर्घायु तथा उनके सुखी, स्वस्थ सेवानिवृत्त जीवन के लिए 'अंकुर' परिवार की ओर से हार्दिक शुभकामनाएँ।

## अलविदा

श्री प्रद्युमन पांडे, सहायक लेखा अधिकारी दिनांक 08-05-2019, श्री राजिन्द्र पुरी, वरिष्ठ लेखाकार दिनांक 02-06-2019, श्री सतपाल, एम.टी.एस. दिनांक 18-08-2019 एवं श्री वरिन्द्र सिंह, वरिष्ठ लेखाकार दिनांक 19-01-2020 को अपनी जीवन-यात्रा पूरी करके अखण्ड ज्योति में समा गये। अंकुर परिवार की ओर से इन दिवंगत आत्माओं के प्रति भाव-भीनी श्रद्धांजलि।

# ਧ੍ਵਜਾਰੋਹਣ





## सुखना झील, चण्डीगढ़



राजभाषा कार्यान्वयन समिति,  
कार्यालय महालेखाकार (लेखा व हकदारी)  
पंजाब एवं यू.टी. चण्डीगढ़ -160017



<http://www.agpungab.gov.in/hindi.html>



Printed at : Azad Offset Printers, 144, Press Site, Ind. Area-1, Chandigarh  
9814011543, 9814111543, 9914111543